(ii) The Inland Vessels (Amendment) Bill, 2005; and

(iii) The Carriage by Road Bill, 2005.

REPORTS OF THE COMMITTEE ON PUBLIC UNDERTAKINGS

(SHRI PYARIMOHAN MOHAPATRA (Orissa): Sir, I lay on the Table a copy each (in English and Hindi) of the following Reports of the Committee on Public Undertakings:—

(i) Twelfth Report on Action Taken by the Government on the recommendations contained in the Third Report of the Committee on Public Undertakings (Fourteenth Lok Sabha) on Power Grid Corporation of India Ltd. Extra expenditure in construction of Kishenpur-MogaTransmission System -Additional expenditure of Rs. 433.81 crores; and

(ii) Thirteenth Report on Action Taken by the Government on the recommendations contained in the Eighth Report of the Committee on Public Undertakings (Fourteenth Lok Sabha) on "Airports Authority of India - Loss of revenue due to delay in award of licences to operate money exchange counters".

REPORT OF THE DEPARTMENT RELATED PARLIAMENTARY STANDING COMMITTEE ON PETROLEUM AND NATURAL GAS

(SHRI DIPANKAR MUKHERJEE (West Bengal): Sir, I lay on the Table a copy (in English and Hindi) of the Eighth Report of the Department-related Parliamentary Standing Committee Committee on Petroleum and Natural Gas (2005-2006) on Action Taken by the Government on the recommendations contained in the Fifth Report (Fourteenth Lok Sabha) of the Committee on "Demands for Grants (2005-2006)" of the Ministry of Petroleum and Natural Gas.

FAREWELL TO RETIRING MEMBERS

MR. CHAIRMAN: Hon. Members, today, we bid farewell to some of our colleagues who are retiring this year on completion of their term of office. Fifty-eight Members will be completing their term of office in the month of April, while three Members from the State of Kerala will complete their term in July! In the constitutional scheme of things, as you know, one-third of our Members retire every second year. This ensures a sort of continuity and change in the composition of the House.

Some of the retiring Members, I am sure, would be re-elected. Those who will not come back will certainly be missed by this House.

I place on record my heartfelt appreciation of the valuable contributions of the retiring Members in the deliberations of the House and the service they rendered to the parliamentary democracy. In fact, the House will surely miss some of the familiar faces when it meets again. I am personally grateful to them for their cooperation in conducting the business of the House. I shall certainly miss the force of their arguments which they often advanced and the liveliness of their speeches which they made in this House.

I wish to express my heartfelt gratitude to the retiring Leaders of Political Parties and Groups and acknowledge the invaluable contributions made by Shri Janeshwar Mishra, Shri Nilotpal Basu, Shrimati Vanga Geetha among others. They would certainly be missed by all of us in the House.

Membership of Rajya Sabha is in itself a great honour and an intense political experience. Many of the retiring members are veterans who had mastered the art of debate and even while making digs at their political opponents, they consistently maintained dignity which was expected of them as Members of this House. Despite having different viewpoints according to one's political persuasion, I need hardly say that all Members contributed significantly towards achieving public good which is our common goal.

I hope the retiring Members too would cherish their association with this august House and the camaraderie with which we all worked together all these years in the House.

I wish the retiring Members long life, full of happiness, good health and prosperity and do hope that they would continue to serve the nation with the same vigour and earnestness as they had been doing in this House.

THE LEADER OF THE OPPOSITION (SHRI JASWANT SINGH): Mr. Chairman, Sir, this Membership of the Parliament, in any event, the conferment of a great distinction upon those of us who have the honour to reach here. Thereafter, Sir, it is also the Membership of a very exclusive Assembly. There are two such Assemblies that we have in the country, this House and the other, which are exclusive and exceptional. But this House of ours is distinctly apart because every two years it renews itself, it renews itself politically every two years; whatever changes or modulations

that might have occurred in the country's political spectrum and profile, they begin to get reflected here, in which sense, this House certainly endeavours, at least, to be much more current than the other Assembly is. Every two years, we renew ourselves and the process continues, in which sense इस सदन में एक निरंतरता है-यह सदन कभी भंग नहीं हो सकता, इस सदन के विचार कभी स्थगित नहीं हो सकते। कई मैम्बरान है, यहां आएं है, अभी वे जाएंगे या आएंगे,उस बारे में मैं निर्णय नहीं कर पा रहा हूं। चेयरमैन साहब,पहले एक गाना हुआ करता था- आए भी वो, गए भी वो,पर यहां तो ऐसे मैम्बरान है कि गए भी वो और आए भी वो। गए ही नहीं और वापिस लौट आए है। यह हमारे सदन की एक विशेषता है। सामने विराजमान हमारे बहुत अनुभवीं मंत्री, जो बड़ी कुशलता और सह्रदयतासे विधि और न्याया विभाग की देखभाल करते है, उनके जाने से हमको बड़ा खेद होता और मुझे लगता है कि शायद सदन में भी एक कमी आ जाती। बड़ी अच्छी बात है, वे इस सदन की निरंतरता के रूप में पुनः हमारे साथ है। निश्चित रूप से वे हमारे मार्ग निर्धारित करते रहेंगे। मेरे बाई ओर सुषमा जी को देखता हूं,सुषमा जी के बिना मेरा तो काम नहीं चल सकता है, तो सुषमा जी भी है , कितना सरल हो गया है। कई मित्रताएं बनी। यह सही है कि राजनीतिक मतांतर पार करके व्यक्तिगत संबंध बनते है, यह इसकी विशेषता है। यहां से जो हमार सहयोगी अब राजीनति के क्षेत्र में अन्य जिम्मेदारियां को संभालेगे, वे जानते है कि उनकी याद यहां रहेगी और उनके लिए हमारे हृदय में जो स्थान बना है, वह बना रहेगा। मैं यहां देखता हूं , हो सकता है कि सिद्वान्त ने हमको एक दूसरे से थोड़ा दूर रखा, विचार भिन्न हो सकते है, मन भिन्न नहीं थे। हम चाहेंगे कि आने वाले वर्षो में, दिनों में यह सम्पर्क बना रहे और यह सौहार्द जो बना है,यह सौहार्द भी बना रहे। हमारी शुभकामनाएं तो है ही, आशा करते है कि देश के गठन में जो योगदान रहता है, वह योगदान निरंतर बना रहेगा।

मैं अपने अनुभव के आधार पर कहता हूं,चेयमैन साहब, आप जानते हैं कि देश के काम-काज में हम एक राजनीतिक कार्यकर्ता के रूप में किसी को खड़ा होते देखें, वर्षो लग जाते है ऐसे कार्यकर्त्ता के गढ़त में। देश को ऐसे कार्यकर्त्ताओं की आवश्यकता है। बनाना बहुत ही मुश्किल है, कई दशक लग जाते है, तब जाकर देश की सेवा के लिए कोई योग्य, अनुभवी, पका हुआ हमारे लिए एक सैनिक मिलता है। तोड़ना तो बहुत सरल है, आधे मिनट की भी जरूरत नहीं है। मूर्ति गढ़ने में बहुत टाइम लगता है, तोड़ने में टाइम नहीं लगता। आप मानकर चलिए, व्यक्तिगत रूप से जो सदन में नहीं रहेंगे, उन्हें हमारी सद् भावनाएं है, शुभकामनाएं है, सौहार्द है और हम चाहेंगे कि देश सेवा में वे सदैव लगे रहें। हमसे कुछ हो सके, उनके निजी, राजनीतिक काम-काज के लिए तो निश्चित याद करें, सेवाएं काम आ सकेंगी, बड़ा अच्छा रहेगा। उन सभी को मेरी बहुत शुभकामनाएं और जो गए भी और आ भी गए, उनको हम बहुत-बहुत बधाई देते है,आइए बड़ा अच्छा है, आप फिर हमारे साथ है। धन्यवाद।

श्री के.रहमान खान(कर्णाटक)**:** चेयरमैन सर,फेयरवैल के इस मौके पर मुअज्जिस मैम्बरान ने जिस तरह से अपने जज्बात का इज़हार फरमाया है, इसकी मैं कद्र करता हूं ।

पार्लियामेंट एक मुकद्दस ऐवान है, जिसका मैम्बर बनने का हमें शरफ हासिल रहा । ऐसा इदारा है, जहां हम में से हर एक को जम्हूरी तरीके से इज़हार राय की पूरी आजादी है । हम लोग यहां मुख्तलिफ ईश्यूज़ पर मुल्क की तामीर-व-तरक्की के मंसूबों पर गौर करते है और तामीरी बहस-ओ-मुबाहिसों में हिस्सा लेते है, तो अक्सर हम लोगों का लब्ब-ओ-लहजा सख्त भी हो जाता है ।ऐसे में चेयर पर मौजूद सदर ही एक सरपरस्त की हैसियत से शफक्कत के साथ, कभी नर्म कभी गर्म अंदाज से जब हमें समझाने की कोशिश करते है तो ये तमाम दिलकश मनाज़िर हमारे सियासी कैरियर का दिलकश बाब बन जाते है । आज जबकि हम में से कई मैम्बरान को अलविदा करके रूख्यत किया जा रहा है, तो इस मौके पर मैं ऐवान के तमाम मुअज्ज़िज़ मैम्बरान का शुक्रिया अदा करता हूं कि उन्होंन अपने भरपूर, खुलूस, प्यार और तअखन से मुझे नवाज़ा । मुझे यह कहने में कोई ताम्मुल नहीं कि आप हज़रात के दरम्यान रहकर जो कुछ मुझे सीखने का मौका मिला, यह जिंदगी का कीमती सरमाया है ।क्योंकि मिलना और बिछुड़ना फितरत का लाज़मी उसूल है । आज से पहले भी हमारे साभी यहां से रूखसत होते रहे है और आगे भी ऐसा ही सिलसिला चलता रहेगा । खासतौर पर राज्य सभा के अन्दर हर दो साले के बाद एक आज़माइश की घ़डी आती है । हालांकि आज भी हम अपने बहुत से दोस्तों से रूखसत हो रहे है, मगर यह विदाई बहुत आरजी है । हममें से कुछ साथी ऐसे है, जो इसी ऐवान में हमसे फिर मिलेंगे और कुछ ऐसे भी है, जिनकी सलाहियतों और तजुर्बात से हम फायदा उठाते रहेंगे । यह कहना गलत न होगा कि पार्लियामेंट का यह ऐवान हामरी ऐसी तरबियतगाह है, जिस तरह ज़माना-ए-तालिबे इन्म में स्कूल और कॉलेज का ज़माना होता है । बिल्कुल इसी प्रकार से पार्लियामेंट का यह ऐवान, जहां पर रह कर हमको मुल्क व कौम की खिदमत करने का मौका हासिल होता है ।

मुल्क के कोने-कोने से आए हुए अपने मुअज्जिज़ मैम्बरान से, इनके तजुर्बात से और इनकी तहरीरी तकरीरों से हमको बहुत कुछ सीखने का मौका मिला । खासकर मैं अपने मुअज्जिज़ मैम्बरान जनाब नीलोत्पल बसु, जनाब दीपांकर मुखर्जी, श्रीमती वंगा गीता का बहुत शुक्रगुज़ार हूं, साथ ही बहुत से ऐसे मुअज्जिज़ मैम्बर्स हैं, जिन्हें हम मिस करेंगे और जिन्होंने अपनी कीमती सलाहियतों के जरिए से इस ऐवान के कार्यो में हिस्सा लिया ।

इस मौके पर मैं अपनी जानिब से आम तमाम लोगों की उम्र दराज़ी, सेहतमंदी, मसर्रत और शादमानी की दुआ करता हूं और आखिर में इस उम्मीद के साथ आपको विदा देता हूं कि

"फूलों की तरह हंस के गुज़रती रहे हयात ।

गम आपके करीब न आए, खुदा करे ।।"

†شری کے رحمن خان "کرنا ٹک": چیئر مین سر، فیئر ویل کے اس موقع پر معزز ممبران نے جس طرح سے اپنے جزبات کا اظہار فرمایا ہے، اس کی میں قدر کرتا ہوں۔

پارلیمنٹ ایک مقدس ایوان ہے، جس کا ممبر بننے کا ہمیں شرف حاصل رہا۔ ایسا ادارہ ہے، جہاں ہم میں سے ہرایک کو جمہوری طریقے سے اظہار رائے کی پوری آزادی ہے۔ ہم لوگ یہاں مختلف ایشوز پر ملک کی تعمیروترقی کے منصوبوں پر غور کرتے ہیں اور تعمیر بحث و مباحشہ میں لیتے ہیں، تو اکثر ہم لوگوں کا لب ولہجہ سخت بھی ہوجاتا ہے۔ ایسے میں چیئر پر موجود صدر ہی ایک سر پرست کی حیثیت سے شفقت کے ساتھ، کبھی نرم کبھی گرم انداز سے جب ہمیں سمجھانے کی کوشش کرتے ہیں تو یہ تمام دلکش مناظر ہمارے سیاسی کیریئر کا دلکش باب بن جاتے ہیں۔ آج جب کہ ہم میں سے کئی ممبران کو الوداع کرکے رخصت کیا جا رہا ہے، تو اس موقع پر میں ایوان کے تمام معزز ممبران کا شکریہ ادا کرتا ہوں کہ انہوں نے اپنے بھرپور خلوص پیار اور تعاون سے مجھے نوازا مجھے یہ کہنے میں کوئی تائمل نہیں کہ آپ حضرات کے درمیان رہ کر جو کچھ مجھے سیکھنے کا موقع ملا یہ زندگی کا قیمتی سرمایہ ہے۔ کیوں کہ ملنا اور بچھڑنا فطرت کا لازمی اصول ہے۔ آج سے پہلے بھی ہمارے ساتھی یہاں سے رخصت ہوتے رہے ہیں اور آگے بھی ایسا ہی سلسلہ چلتا رہے گا۔ خاص طور پر راجیہ سبھا کے اندر ہر دو سال کے بعد ایک آزمائش کی گھڑی آتی ہے۔ حالانکہ آج بھی ہم اپنے بہت سے دوستوں سے رخصت ہو رہے ہیں، مگر یہ وداعی بہت عارضی ہے۔ ہم میں سے کچھ ساتھی ایسے ہیں، جو اسی ایوان میں ہم سے پھر ملیں گے اور کچھ ایسے بھی ہیں، جن کی صلاحیتوں اور تجربات سے ہم فائدہ اٹھاتے رہیں گے۔ یہ کہنا غلط نہ ہوگا کہ پارلیمنٹ کا یہ ایوان ہماری ایسی تربیت گاہ ہے، جس طرح زمانۂ طالب علمی میں اسکول اور کالج کا زمانہ ہوتا ہے۔ بلکل اسی طرح سے پارلیمنٹ کا یہ ایوان، جہاں پر رہ کر ہم کو ملک وہ قوم کی خدمت کرنے کا موقع حاصل ہوتا ہے۔

ملک کے کونے کونے سے آئے ہوئے اپنے معزز ممبران سے، ان کے تجربات سے اور انکی تحریری تقریریوں سے ہم کو بہت کچھ سیکھنے کا موقع ملا۔ خاص کر میں اپنے معزز ممبران جناب نیلوتپل بسو، جناب دیپانکر

†Transliteration of Urdu Script.

مکھر جی، شریمتی ونگا گیتا کا بہت شکرگزار ہوں، ساتھ ہی بہت سے ایسے معزز ممبران ہیں، جنہیں ہم مس کریں گے اور جنہوں نے اپنی قیمتی صلاحیتوں کے ذریعے سے ایوان کے کاریوں میں حصہ لیا۔

اس موقع پر میں اپنی جانب سے آپ تمام لوگوں کی عمر درازی، صحت مندی، مسرت اور شادمانی کی دعا کرتا ہوں اور آخر میں اس امید کے ساتھ آپ کو وداع دیتا ہوں کہ۔

پھولوں کی طرح ہنس کے گزرتی رہے حیات
غم آپ کے قریب نہ آئے، خدا کرے

"ختم شد"

SHRI NILOTPAL BASU (West Bengal): Mr. Chairman, Sir, at the very outset, I must thank the hon. Deputy Chairman and all other presiding Members with whom I have come across during these last 12 years of my tenure in the House. I must also register my sense of appreciation for the kind words which have been stated here by the hon. Leader of the Opposition. Sir, so far as I am concerned, I came here 12 years back and I still remember hon. K.R. Narayananji who used to be the Chairman in those days. The first day I came here, I remember, I was sitting in the last Bench and I asked the last question that was a supplementary. He was kind enough to identify me. From that very day, innumerable times I have spoken in this House. I think, I must also put on record this because I was relatively young in those days and through the years also.

SHRI DIPANKAR MUKHERJEE (West Bengal) I was also very young *...(Interruptions).,.*

SHRI NILOTPAL BASU: Even now, I have spoken and intervened in this House in a style, which is my own Sometimes, I have acid tongue and I must today pay my apology to all those hon. Members, who, however, continue to be a source of inspiration, but who might have been at the receiving end of my acid tongue, including the Leader of the House. But I can assure you, Sir, that at no point of time I have spoken out in the House with a sense of personal disregard. At any point of time, inside the House or outside the House, in discharging my responsibility as a Member of Parliament, Member of this great institution if I have caused any sense of personal hurt to anybody, I stand guilty and I apoligise profusely for all that. Sir, I think this is an occasion not only for making personal reflections, because in spite of all our differences, I think, collectively, the way we

---

†Transliteration of Urdu Script.

conduct ourselves is the major question that we have to address ourselves. Essentially, this is a very good tradition that we have in this House on such occasions and this should be used for serious introspection of where we stand as an institution at this very crossroads. I think, the world today is going through momentous changes and it is very important for us to remain relevant as an institution in these changing times and to rediscover and re-invent ourselves and be equal to the kind of challenges that are thrown up by the changes that we witness and we share and we are participants to. So, I think it is very important that our basic responsibility of acting as a real conduit, as a safety valve in this democracy to hold the Government to account, to make the Government more accountable so that the governance in this country becomes more transparent and more people-friendly. That is the major concern that we have because the world over, we are seeing that a new set of changes that are taking place in the economy, in the society, in the political and international relations. I mean, there is an increasing pressure on the elected representatives of the people that whether they are equal to, whether they are relevant to in addressing the concerns of the people. Ultimately, unless we are always reminded of this fact that we are accountable to the people, to our constituents, who have elected us because as the hon. Leader of the Opposition so eloquently put it, I mean, the beauty of this House is, at any given point in time, will represent the totality of the political spectrum which is obtaining in different State Assemblies, and it is the Council of States that actually reflects the aspirations, the woes, the difficulties, the pains and the ecstasies of the people of this country. Therefore, I think, from that point of view, it is very vital. So, even if we, at times, become acrimonious, ultimately, our judgement should be in terms of whether we are being able to reflect the aspirations and the woes of the people, whether we are effective enough in articulating the concerns that they have. Otherwise, this House becomes irrelevant. It is very important at this point in time to recollect that in the first week of the functioning of this great House, the then Chairman, Dr. Radhakrishnan, when was posed with this question, "What will be the relevance of this House?", he said, "The quality of our deliberations will determine what relevance Rajya Sabha will have, the Council of States will have" I think, over the years, because the Benches of this great House have been adorned by many illustrious sons and daughters of this country, and we have stood our ground and we have proved the relevance of this particular House. I think that is increasing because of these global changes and all that. Day in and day out, there are questions raised about our effectiveness, about the manner in which we are articulating the concerns, I think it is most important.

So far as my retirement is concerned, the other day also, some very good friends, hon. Members, were telling me to give an emotional speech. My difficulty is that I have been in public life so young, and I have never thought it like that, and I cannot also construe this event as a retirement because I was part of the political process and as a part of the political process, I was trying to display and demonstrate and articulate the views of our Party, of the people whom I represent in this House, which is a function which I will continue to perform. So, I don't think that way. So far as I am concerned, I am retiring, but I think what is important is that all of us together, I mean, it is very good and significant that Pranabda has come because I owe, whatever I have done in this House, whatever I have learnt, to people like Pranabda and many other hon. Members. I have learnt many things and the only part of this House that I will be really missing after 2nd April is the process of learning that I was going through, and, I think, that is a process which goes on till one leaves. And, that part of the lesson will not be available to me directly and that is my only regret. Otherwise, I have the best of memories, I think, i must thank the present Secretary-General and all those, and, the Secretariat under the Secretary-General who have been there. Sir, we have a great institution, Rajya Sabha Secretariat with great heights of efficiency that they discharge in really helping Members, because I have also learnt many things, I must say, from outstanding officers of the Secretariat, and, without them, I think, we cannot function. So, I think, for me, also it will be a sense of renewal as an individual, as a participant in the greater, wider, political process and public life of this country. I again thank all of you and I will really miss you a little bit, but not so much, because I will be a part of the same process which has really produced an institution that we all cherish. Thank you.

SHRI P.G. NARAYANAN (Tamil Nadu): Mr. Chairman, Sir, it is with a sense of unhappiness that today we are bidding farewell to our Members who are retiring.

Sir, in Rajya Sabha, after every two years some Members retire and some new Members come in. Sir, I am happy that some of our retiring Members like our hon. Deputy Chairman, Shrimati Sushma Swaraj and the Minister of Law and Justice, Shri H.R. Bhardwaj have been re-nominated to this House. But friends like Nilotpal Basu, Dipankar Mukherjee who have completed two terms are not able to come back *...(Interruptions)...* because their party norms do not permit them to be re-elected for the third

term. We will certainly miss them for their active participation in the deliberations of this House. All the Members who are retiring have enriched this House by their valuable contributions in the proceedings of the House on many occasions.

Sir, I wish them happiness, long life and prosperity wherever they go, and, I hope that they would continue to serve the people of this country with the same vigour and honesty. Thank you.

SHRI RAVULA CHANDRA SEKAR REDDY (Andhra Pradesh): Mr. Chairman, Sir, I wish all the retiring Members the very best. Sir, four colleagues of my Party are also retiring though they are very young. It is not the age of retirement for them as they are young and energetic. They are going back to carry on with the party activities, the only thing is that we will be missing them here in this august House, more particularly, the voice of my elder brother, Dr. Alladi P. Rajkumar, Shrimati Vanga Geetha, Shri K. Rama Mohana Rao, Shri Rama Muni Reddy. Sir, we will be missing the advice of my esteemed colleagues Shri Nilotpal Basu and the experience of Shri Dipankar Mukherjee. He is party *Andhraite. ...(Interruptions)...* I agree, Sir. We are honoured. Sir, without taking much time, I would prefer to hear the speeches of the outgoing Members. Once again, I wish all the best to the retiring Members. Thank you.

प्रो.राम देव भंडारी(बिहार):माननीय सभापति जी, अपने जिन मित्रों के साथ हमने बरसों बिताए है, उनको विदा करना उतना आसान नहीं होता। यह सदन एक परिवार है, स्थायी परिवार है और आप इसके अभिभावक है। प्रत्येक दो वर्ष में इस परिवार के एक-तिहाई सदस्य यहां से चले जाते है, विदाई ले लेते है, मगर इसकी निरंतरता बनी रहती है। मेरी पार्टी के तीन सदस्य –डा.कुमकुम राय, श्री विजय सिंह यादव और श्री विद्या सागर निषाद, इस सदन से विदाई ले रहे हैं। बरसों से मैं श्री नीलोत्पल बसु के साथ बैठता रहा हूं, श्री दीपांकर मुखर्जी भी जा रहे हैं, और भी जो माननीय सदस्य विदाई ले रहे हैं, उनको भी मैंने इस माननीय सदन में देश के लिए अपनी बातें कहते हुए देखा है। देश के प्रति सभी का बहुत बड़ा Contribution रहा है। यह देश, इनके contribution को नहीं भूलेगा।

सभापति महोदय, कई माननीय सदस्य जो रिटायर हो चुके थे, वे सदन में पुनः लौट आए है, मैं उनको अपनी शुभकामनाएं देता हूं। जो माननीय सदस्य यहां से जा रहे है, यह स्थायी जाना नहीं है। हो सकता है कि इनमें से कई सदस्य दो वर्ष के बाद फिर लौटकर चले आएं। वे जहां भी जाएंगे, देश को इनकी जरूरत है, देश की प्रगति और विकास में इनका बड़ा योगदान होता रहेगा। हो सकता है

कि इनकी आवश्यकता इनके राज्य में महसूस की जा रही हो या देश के दूसरे क्षेत्रों में महसूस की जा रही हो। देश की सेवा, चाहे वह इस सदन के माध्यम से हो या देश के दूसरे क्षेत्रों के माध्यम से हो, वे हमेशा करते रहेंगे। देश को इनकी जरूरत है। मैं इनको अपनी ओर से शुभकामनाएं देता हूं और आशा करता हूं कि वे पुनः इस परिवार में कुछ वर्षो के बाद शामिल होंगे। इन्हीं शब्दों के साथ, मैं अपनी बात समाप्त करता हूं। बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री उदय प्रताप सिंह(उत्तर प्रदेश): सभापति महोदय, मैं भी अपने पूर्व वक्ताओं के साथ अपने को सम्बद्व करते हुए , इस सदन से जो लोग जा रहे है, उनके प्रति बहुत सम्मान प्रकट करता हूं और जो लोग पुनः चुनकर आ गए है , उनको बधाई देता हूं। मै यह कहना चाहता हूं कि –

"वास्तव में सुख-दुख क्या है,
यह बताता है बसंत।
जितनी झर जाती है,
उतीन ही निकलती पंत्तियां।

सभापति जी, जैसे बसंत में जितनी पत्तियां झर जाती है , उतनी फिर निकलती है, उसकी तरह यह सदन भी निंरतर है , लेकिन इसमें और उसमें एक अंतर है कि प्रकृति हमें सिखाती है, लेकिन यह सदन देश के हित में सोचता और काम करता है। हमारे विचार अलग-अलग हो सकते है, कभी-कभी कटुताएं भी हो जाती है, बड़ी बात भी हो जाती है, लेकिन अंत में सारे लोग अपनी-अपनी तरह देश की सेवा में लगे हुए है। इसलिए वे सब सम्मान के योग्य है। कुछ लोग वापस आ रहे है, मैने अभी सुषमा जी को भी बधाई दी थी, भारद्वाज जी को भी बधाई दी थी, हमारी पार्टी के जनेश्वर जी और दारा सिंह जी रिटायर हो रहे हैं , उनमें से जनेश्चर जी फिर चुनकर आ गए है और दारा सिंह जी फिर आएंगे, ऐसी मैं उम्मीद करता हूं। मैं यह कहना चाहता हूं कि यह जो आना और जाना है, यह महत्वपूर्ण नही है, क्योंकि—

"सुख और दुख तो भावों के भ्रम है,
मन के मानने से होते हैं।
मैंने तो यह भी देख है कि लोग,
खुशी में भी रोते हैं।"

लेकिन सवाल यह है कि लोगों ने जो महत्वपूर्ण काम किया है, जैसा कि अभी श्री बसु जी ने कहा था कि हम लोग यहां सीखते भी है और सेवा भी करते है। मैं सब लोगों से सम्बद्व करते हुए, जो लोग जा रहे है, उनको बहुत-बहुत शुभकामनाएं दे रहा हूं कि वे फिर आएं और जैसा कि अभी कहा गया कि राजनीति एक क्रम है, जो कभी बंद नहीं होता, यहां से हम चले जाएंगे, तो भी हम देश-सेवा में लगे रहते है। मैं उन लोगों को बहुत शुभकामनाएं दे रहा हूं और जो नए लोग चुनकर आए है, उनका बहुत-बहुत स्वागत करता हूं। धन्यवाद।

SHRIMATI BIMBA RAIKAR (Karnataka): Respected Sir, today is a little sad day for me. Please don't misinterpret me because I am saying that it is a sad day. It is a sad day not because I am not continuing; it is a sad day because I will miss all of you. I want to tell the House one thing. Sir, you will be surprised to know that I got this Rajya Sabha seat within ten minutes, which I never expected. When I got this seat, I was a little nervous, because I knew that this was the House of Elders, the House of intellectuals, and the House of all experienced people. At that time, I felt I was nothing before these people. I did not know whether I would be able to speak or able to open my mouth here. But to my surprise, Sir, with the cooperation of the Chairman, and now our present Chairman, who appears to be very serious but is very good at heart, I was able to do it. The Deputy Chairman, who is from Karnataka, is always a smiling face, very kind, and very affectionate. Actually, both of them are kind and both of them are affectionate. So, with all your encouragement and with the help of giants like Sushmaji, who is in my front, the former Deputy Chairman, Najmaji, all the hon. Members from different political parties, all my party people, especially youngsters like Hariprasadji, great poetess like Dr. Prabhaji, my colleagues from Karnataka, Shrimati Premaji, and my sisters like Jamana Deviji and Manharji, who are all intellectual giants, I really learnt many things. I never wanted to come to the Rajya Sabha. I was very nervous. I wanted a seat in my State Vidhan Sabha. Luckily, I went with a bouquet of flowers to present my colleague who was selected for this seat. But she was reluctant and never wanted to come here. So, within ten minutes, I was given this seat. I came here and learnt many things. Now, I think, I can open my mouth and speak. It is only because of your cooperation. I don't take it seriously. This process is just like a river. The river always flows; it never stops. So, this process also may continue and who knows God may again give me a chance and I may come again here. My beloved Prime Minister is also sitting here. We are so lucky to have the Prime Minister for our farewell. I hope, the Prime Minister will definitely remember me, and he will try to bring me here again. While participating in the debate on the Ministry of Food and Civil Supplies, I have already declared in my speech that I am a BPL lady. So, he will be kind enough to bring me back here. I have great hopes. Also, I want to thank the Congress President, Soniaji, my friend, Margaret Alvaji, our former Chief Minister, Mr. S.M. Krishna, and all my MLAs who got me elected and brought me here and gave me a chance to be with you all for the last six years. I never

felt it was a period of six years. I still feel it was not even six months. I am very happy. I learnt many things. I might have committed many mistakes also. Ex-Vice-Chancellors are there; ex-Ministers are there; poets are there; scientists are there; cinema actresses are there; lawyers are there; giants like Sushmaji is there; and all my colleagues are there, especially the Whip, Narayanasamyji, who is not here, all of them gave me so much cooperation. I have just said that the hon. Chairman looks very serious, but actually he is very kind and is very good to us. Rahman Khanji has been very good to us. So, I am very thankful to all of you. I hope, if I have committed any mistake, you will forgive me. Thank you very much, Sir.

SHRI B.J. PANDA (Orissa): Sir, in conveying my gratitude and bidding farewell to the retiring Members. I would like, first of all, to convey my own personal sense of gratitude for having had the opportunity and the privilege of serving in this august House along with them which has been a learning experience par excellence.

Sir, during these last six years, when these Members have served in this House, we have had historic developments. In this, the biggest and the greatest democracy in the world, we have had an attack on this august House itself which has defined our response to terrorism in the world. We have had historic legislations. There have been many routine legislations. But We also have had historic legislations for which it has been my privilege to participate along with all the Members and the great contributions made by some of the Members who are retiring today cannot be forgotten.

Sir, I would like to mention today that the Member of my party who is retiring, Shri Birabhadra Singh, may not have been here, but, I know he shares my deep sense of pride of having had the privilege of representing Orissa in this Council of States and without further ado, Sir, I would like to convey my very best wishes, both on a personal basis and on a political basis, to all the Members who are retiring today. I do know that many of them will be back to serve in this august House and I look forward to welcoming some of them when they are back. Thank you, Sir.

श्री मती कमला मनहर(छत्तीसगढ): सभापति महोदय, मेरे पति स्व. भगत राम मनहर जी इस सदन के सदस्य थे ।उनके आकस्मिक निधन से जो स्थान रिक्त हुआ, उसके लिए मेरा मनोनयन हमारी कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी जी ने किया । मैं उकनी ह्रदय से आभारी हूं और सदा आभारी रहूंगी । हमारे प्रधानमंत्री जी ने मुझे बहुत सहयोग दिया, मैं उनकी भी आभारी हूं । हमारी पार्टी

के जितने भी नेता है, मैं सभी की आभारी हूं। ढाई साल के इस अल्प काल में मुझे इस सदन में कई क्षेत्रों से आए हुए विद्वानों का सहयोग और साथ मिला, मैं उनकी भी आभारी हूं। सभापति महोदय, आपने समय-समय पर मुझे इस सदन में बोलने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपकी आभारी हूं। मैं पूर्ण गृहिणी होते हुए भी समाज सेवा से जुड़ी हुई थी और इस सदन का सदस्य रहते हुए भी मैं समाज सेवा से जुड़ी हुई थी। भविष्य में भी मेरा यही कार्यक्षेत्र रहेगा। धन्यवाद।

श्री राम नाथ कोविन्द(उत्तर प्रदेश)**:** धन्यवाद, सभापति महोदय, मेरे लिए इस सदन में मेरे 12 वर्ष का यह अन्तिम दिन है।

श्री सभापति: अभी कल का दिन और है।

श्री राम नाथ कोविन्द: सभापति महोदय, मैं जब वर्ष 1994 में, मुझे तिथि याद है, 2 अप्रैल को मैं यहां पर आया था, तो मुझे इसी तरफ डिविजन नम्बर 224 मिला था। मैं कल यह देखने गया था कि इस सतय उस पर कौन बैठ रहा है, तो मुझे जानकारी मिली कि वशिष्ठ नारायण सिंह जी को वह डिविजन नम्बर आवंटित हुआ है। सभापति महोदय, इन पिछले 12 वर्षो में मुझे विभिन्न प्रकार के अनुभवों को लाभ मिला। इस बीच पांच प्रधानमंत्रियों, जिनके साथ काम करने, बात रकने, इंटर-एक्ट करने का मौका मिला, उनमें स्वं नरसिंह राव जी, देवगौड़ा जी, आई.के गुजराल साहब, अटल बिहारी वाजपेयी जी और वर्तमान प्रधानमंत्री है,डा.मनमोहन सिंह जी ...(**व्यवधान**)... चंद्रशेखर जी इस बीच नहीं थे। सभापति महोदय, जब चर्चा के दौरान क्लाइमैक्स हो जाता है, जैसे समुद्र में हाई टाइड व लो टाइड होती है, मैंने उस हाउस में इस प्रकार के इंटरप्शंस भी देखे। कई-कई दिनों तक चलने वाले इंटरप्शंस भी देखे और इस प्रकार के एक-एक सप्ताह, दो-दो सप्ताह के इंटरप्शंस भी देखे। मैं कई पार्लियामेंटरी कमेटीज से जुड़ा रहा। वहां मुझे एक बबहुआयामी अनुभव मिला। जब हम लोग स्टडी दूर पर जाते थे तो विशेषकर एक पार्टी एफिलिएशन से हटकर , वहां तो मित्रता और व्यक्तिगत संपर्क बनते है, उनको मैं सदैव याद रखूंगा। मुझे लगता है कि सदन में रहकर इतने लोगों से, सभी प्रकार के मित्रों से इतनी दोस्ती नहीं हो सकी, जितनी कि स्टेंडिंग कमेटीज, पार्लियामेंटरी कमेटीज और स्टडी टूर्स के दौरान हुई।

महोदद, मैं इसे अपना सौभाग्य मानता हूं कि इसी दौरान मुझे कई बार विदेश जाने का अवसर मिला। एक बार सरकार की ओर से, कॉमनवैल्थ पार्लियामेंटरी काफंरेंस, जो लंदन में लगभग एक सप्ताह चली, में जाने का मौका मिला। वहां अपने विभिन्न प्रदेशों से आए स्वीकर्स के साथ इंटरएक्ट करने का मुझे मौका मिला। इस के पश्चात् यू.एन.ओ.,न्यूयार्क में भी जनरल एसेंबली को संबोधित करने का मुझे अवसर मिला जिसे मैं अपना सौभाग्य मानता हूं।

सभापति महोदय,मैं समाज के जिस कमजोर वर्ग से आता हूं, उनकी विभिन्न समस्याओं को यहां पर उजागर करने का मुझे मौका मिला। मुझे खुशी है कि कई लोगों ने उसे एप्रिसिएट किया। मैं उस

संबंध में एक सेंटेंस दोहराना चाहूंगा। मैं उस तरफ बैठा हुआ था और मैंने हाउस को संबोधित करते हुए कहा था कि " समाज का जो पिछड़ा वर्ग है, विशेषकर अनुसूचित जाति और जनजाति, उन को लगता है कि उन के साथ में अन्याया हुआ है। जो उनका हक उन्हें 10-20 वर्ष मिल जाना चाहिए था, वह अभी तक 50-55 साल में नहीं मिला। महोदय,इस का दूसरा पहलू भी है कि जो लोग देने वाले है,उन को भी लग रहा है , जो नॉन-एस.सी./एस.टीज. के लोग है, उन को भी लग रहा है कि आरक्षण होते हुए 50 वर्ष बीत गए, क्या यह आरक्षण सदियों तक चलता रहेगा ? तो मैंने कहा कि दोनों वर्गो की अपनी-अपनी सोच है और मुझे लगता है कि, let us sit across the table. जो इस देश के विभिन्न राजनीतिक दलों के बड़े-बड़े राजनेता है,वे बैठकर इस मसले पर कुछ समझौता करे, कुछ हल निकालें कि क्या वास्तव में आरक्षण जरूरी है और कब तक जरूरी है और उनको जो मिलना चाहिए था, वह अभी तक क्यों नहीं मिला ? जब मैंने यह बात कही थी तो कांग्रेस के कपिल सिब्बल, अभी यहां, नहीं है, वह आजकल मंत्री है वह और कई अपोजीशन बेंचेज के माननीय सदस्य आए और उन्होंने मुझे कहा कि you have made a very good point .

सभापति महोदय, मुझे इस दौरान राज्य सभा की आवास समिति का अध्यक्ष बनने का भी अवसर मिला। उस दौरान across the party line बहुत सारे लोगों से मेरा संपर्क हुआ और जितना मैं अपनी ओर से कर सकता था, उतना मैंने उन को ओब्लाइज करने का प्रयास भी किया। उस दौरान यहां तक कि चीफ मिनिस्टर व मिनिस्टर्स को छोड़िए, दूसरी पॉलिटिकल पार्टीज के लीडर्स के भी टेलिफोंस आते थे। मुझे लगता था कि शयद वह पद बहुत बड़ा है। अंततोगत्वा मुझे लगा कि उस पद पर रहकर सदस्यों को खुश कम किया जा सकता है, नाराज अधिक होते थे। फिर भी वह एक अलग प्रकार का अनुभव है, लेकिन मैं इस संबंध में वर्तमान प्रधानमंत्री जी, जो उस समय अपोजीशन के लीडर थे, हालांकि आप से कभी मेरा इंटरएक्शन नहीं हुआ था, लेनिक जब मैं चैयरमेन हाउस कमेटी था,उस समय एक बार मुझे इन से इंटरएक्ट करने का मौका मिला। मैं इन के चेंबर में गया, बात हुई। मैं उस का उल्लेख नहीं कर रहा हूं, लेकिन जितनी विनम्रता और सह्रदयता मैंने तत्कालीन अपोजीशन के लीडर और वर्तमान प्रधान मंत्री जी में देखीं, उसकी कल्पना शायद मेरे मन में नहीं थी। और मुझे लगता है कि यदि राजनेताओं में उतनी सह्रदयता और विनम्रता हो, तो यह बहुत अच्छी बात होगी।

सभापति महोदय, 1994 में मेरी एक मेडेन स्पीच थी। मैं प्रोफेशनली एक एडवोकेट रहा हूं। सबसे पहले मेरी पार्टी ने यहां पर सुप्रीम कोर्ट और हाई कोर्ट के जजेज़ के perks को बढ़ाने को एक बिल लाया था। उस पर मुझे भी बोलने का मौका मिला। वह मेरी मेडेन स्पील थी। उस समय मैडम नजमा हेपतुल्ला जी चेयर पर थीं। मुझे याद है कि जब मेरी वह स्पीच खत्म हुई , तो उन्होंने ऊपर से एक नोट भेजा, जिसमें लिखा था,"you are a good parliamentarian .please keep it up. " मैंने उसे अभी भी सम्भाल कर रखा है। मैंने इसका उल्लेख इसलिए किया क्योंकि

आज से लगभग 10 दिन पूर्व जब एक अटेम्प्ट ऑफ् कोट्र्स एक्ट, जिसमें अमेंडमेंट आया था, उस पर मैंने फिर बोला, तो उस समय भी नजमा भी यहां उपस्थित थी । उन्होंने मुझे फिर कहा कि you have spoken very well. मैंने उनसेएक सवाल पूछा और इस बात की उनको याद दिलाई । मैंने कहा कि जब मैंने पहली बार बोला था, तो आपने कहा था कि you are a good parliamentarian. मैंने यह भी कहा कि मुझे वह राज़ बताइए कि सक्सेसफुल पालिर्यामेंटेरियन कैसे बना जा सकता है ? आपने मुझे आज तक गुड पार्लियामेंटेंरियन तो कहा, लेकिल एक्सेसफुल पार्लियामेंटेरियन नहीं कहा । इस पर मैडम नजमा हेफ्तुल्ला जी ने कहा कि मुझे लगता है कि पार्लियामेंट में आने का जो एक रूट और भी है, लोक सभा रूष्ट, यदि आप उससे होकर आते, तो शायद आपको हम लोग कह सकते थे कि you are not only a good parliamentarian, but you have become a successful parliamentarian.

सभापति महोदय,मैं इस सदन से 2 अप्रैल को रिटायर हो रहा हूं, लेनिक मैं इसे एक बहुत अच्छा भाव और अच्छी नियति मानता हूं । मैं नियति इस दृष्टि से मानता हूं क्योंकि मैं तो दिल्ली में हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट में वकालत करता था । मेरी पार्टी ने मुझे 1991 में लोक सभा का चुनाव लड़ाया,लेकिन अनफॉर्चुनेटली लगभग 18 हजार वोटों से मैं हार गया । तब मैं याद करता हूं कि यदि मैं लोक सभा का चुनाव न लड़ा होता, चाहे हारने के लिए ही, तो शायद मेरी इंट्री इस सदन में नहीं हुई होती । इसी परिप्रेक्ष्य में आज मैं देखता हूं कि यदि मैं यहां पर फिर आ जाता, तो शायद सक्सेसफुल पार्लियामेंटेरियन बनने के लिए जो एक दूसरा रूट है, लोक सभा का रूट, शायद उस अपॉर्चुनिटी से वंचति रह जाता । इसलिए सभापति महोदय, मैं मानता हूं कि जो होता है, वह अच्छा ही होता है ।

सभापति महोदय, मैं आज के दिन आपका बहुत-बहुत आभार व्यक्त करना चाहूंगा कि आपने मुझे समय-समय पर प्रोत्साहित किया और इस हाऊस की intrioacies तथा जो और भी कई चीजें है, उनके बारे में मुझे बार-बार बताया । मैं उपसभापति, श्री रहमान साहब का भी बहुत आभारी हूं । इसके साथ ही मैं अपनी पार्टी के नेताओं, विशेष कर श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी का, माननीय श्री लाल कृष्ण आडवाणी जी का, डा.मुरली मनोहर जोशी जी का और विशेष रूप से इस सदन में जिनता हमें मार्गदर्शन मिलता रहा , श्री जसवन्त सिंह जी का तथा श्रीमती सुषमा स्वराज जी का आभार व्यक्त करना चाहता हूं । हम सुषमा जी के लिए जानते हैं कि she is a very well-read Member. मैंने जी जिस विषय पर भी बात की तो मुझे लगता है कि शायद इतना फीड बैक और कहीं से नहीं मिल सकता था, जितना मुझे सुषमा जी से मिलता रहा । माननीय श्री जसवन्त सिंह जी बोलते कम है, लेकिन वे ह्रदय से बहुत साफ है, बहुत साफ । कोई भी व्यक्तिगत रूप से उनसे मिलता है, तो मैं समझ सकता हूं, कि शायद उनकी विनम्रता की भी कोई पराकाष्ठा नहीं है ।

महोदय, मैं इसके साथ ही महासचिव महोदय, श्री योगेन्द्र नारायण जी का और पूरे राज्य सभा सचिवालय का आभार व्यक्त करना चाहता हूं। मैंने इस सचिवालय की यह विशेषता देखी कि यह अपने सदस्यों का सहयोग करने में सदैव तत्पर रहता है। और यह एक विशेष गुण, इसे मैं मानता हूं। जो हम नहीं भी जानते है, वह सब जानने का काम यह सचिवालय करता है। जो हम नहीं होते हैं, तो नहीं बन पाते है, वह बनाने का काम यह सचिवालय करता है। मुझे लगता है कि आज के इस अवसर पर आपने मुझे जो बोलने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपका आभार व्यक्त करता हूं। धन्यवाद।

श्री दीपांकर मुखर्जी: सभापति महोदय,पहले तो मैं एक व्यवस्था का प्रश्न उठता हूं। सुरेश पचौरी जी नहीं है, सुरेश पचौरी जी के वर्ड्स नहीं है।

डा.मुरली मनोहर जोशी(उत्तर प्रदेश)**:** अब आप अव्यवस्था और अधिक न करें, जो आप करते रहे हैं। जाते –जाते तो अव्यवस्था न करें। ...(**व्यवधान**)....

श्री दीपांकर मुखर्जी: सर, 8 मार्च से यह फेयरवेल की घंटी जो बजानी शुरू की दी, जबकि 2 अप्रैल को विदाई होनी है। यह 8 मार्च से ऐसा लग रहा है कि हमारी विदाई करने को बहुत लोग आतुर है। ऐसा तो नहीं होना चाहिए। बाहर 8 मार्च के बाद किसी ने बोला कि आपकी तो विदाई हो गई,फेयरवेल हो गया,गिफ्ट मिल गया, खाना भी हो गया, फोटोग्राफ भी हो गया, अब भी आप क्यों बोल रहे हो हाऊस में ? तो ऐसा कुछ वातावरण हुआ। सर, पहले मैं बता दूं, बचपन में मेरे पिता जी रेलवे में काम करते थे। मैं मां से पूछता था कि फादर का ट्रांसफर कब होगा ? ट्रांसफर होगा, मतलब फेयरवेल और फेयरवेल होगा, तो मिठाई मिलती थी। तो I used to ask her ट्रांसफर कब होगा ? उसके बाद जब मैं नौकरी करने लगा, मेरी तरफ तो देख ही रहे हैं आप Because of my acts of omissions and commissions, I have to leave many jobs. मैं यह कह दूं, जयराम रमेश जी नहीं है क्या ? प्राइवेट सेक्टर में भी मैंने काम किया है,ऐसी बात नहीं है कि खाली पब्लिक सेक्टर काम किया है, प्राइवेट और पब्लिक, दोनों में किया है।

सर,यहां एक व्यवस्था का प्रश्न और डाल दिया, मैं जो बता रहा था , आपने कहा कि यह प्रश्न उठा रहा है। सर, यह फेयरवेल का मौका एक ऐसा है, आप जो बता रहे थे, मुझे याद आ रहा था, आप भी हंस रहे थे, मुझे मालूम नहीं कि किसलिए, और मैं भी हंस रहा था, कि फेयरवेल का मौका एक ऐसा है कि फेयरवेल के टाइम पर मुझे मालूम है कि कुछ न कुछ शब्द ऐसे बोले जाते है, अगर चले भी जाएंगे दुनिया से तो आपको सुनने को नहीं मिलते कि आपके बारे में क्या-क्या अच्छे शब्द बोले जा रहे है, मगर यह एक ऐसा मौका है, जब आपको अपने बारे में काफी ऐसी-ऐसी गुणावली बताई जाती है, जो और मौकों पर आपको नहीं बताया जाता । मैं अगर आपकी जगह पर होता, तो मैं जरूर कहता, आप तो नहीं कह पाएंगे, मगर मैं आपकी जगह पर होता, तो मन में कहता कि यह

गया, थोड़ी सी तो हमको राहत मिली । Notwithstanding the fact that कि अहलुवालिया जी और पाणि जी फिर भी हैं ।

श्री सभापति: यह बात केवल मैं ही नहीं कहता , अगर इस जगह पर नीलोत्पल जी भी बैठे होते, तो वे यही कहते ।

श्री दीपांकर मुखर्जी: सर,मुझे दो-चार ही बातें करनी है । जब भी मैं पार्लियामेंट में आता हूं, तो जो फर्स्ट इम्प्रेशन मेरे ऊपर हुआ है, मैं तो यही कहूंगा कि इस कोने में कोटैया साहब बैठते थे, प्रागदा कोटैया हेंडलूम वर्कर थे, दो साल मैंने उनको देखा, हेंडलू वर्कर्स के लिए, वह धोती कुर्ता पहनकर वहां खड़े होते थे और एक टाइम ऐसा हुआ कि वह विरोध में हेंडलूम वर्कर्स के लिए यहां तक चले आए और उस समय के प्राइम मिनिस्टर नरसिंह राव जी और वैकटास्वामी, लेबर मिनिस्टर उनको वेल में जाने से रोक रहे थे । They were trying to speak to him in Telugu .मैं तेलूगू समझ लेता हूं । अब चाहे एप्रीसिएट करें या नहीं । तो मैं समझ रहा था, उनको बोले कि ठीक है, हम देखेंगे । निदम्बरम साहब हंस रहे है ,मुस्करा रहे है और अरूण जेटली साहब,पता नहीं, आजकल का यह जो वातावरा है न,यह समर्थन देते हो और फिर विरोध क्यों करते हो ,नूरा कुश्ती है,या क्या-क्या, पता नहीं, नोट फाइटिंग, अगर कोटैया साहब को दो साल या उस दिन आप लोग देखते , पता नहीं आज के जमाने में वे बच्चे आते है, एक डंडा लेकर घूमते रहते है न, आपका क्या रिएक्शन है, क्या रिएक्शन है, कोटैया को क्या बोलते कि सरकार गिरा दोगे, सरकार उठा दोगे ? But I knew that it was not for सरकार गिराना, सरकार बचाना । He is committed to the handloom workers. I don't know where he is now. I am not aware .

श्री मती सुषमा स्वराज(उत्तरांचल)ः प्रागदा कोटैया जी की डैथ हो गई ।

12.00 Noon

श्री दीपांकर मुखर्जी: लेकिन जो कमिटमेंट हमने देखी, सर, वहीं फर्स्ट इम्प्रेशन था और सतीश अग्रवाल जी थे यहां पर, डिप्टी लीडर थे, बड़े लीडर है, आजकल कितने लीडर ऐसा करते है । मुझे याद है, खाली उनके वहां के मैम्बर्स नहीं, जितने नए-नए मैम्बर्स होते, जहां भी मौका मिलता उन्हें,सेंट्रल हाल में या कहीं भी, पार्लियामेंट के बारे में बताना, उनके बारे में जानकारी देना, I got some knowledge or tips on how to become a good Parliamentarian. I remember him and I remember his speeches. I remember one speech of Dr. Murli Manohar Joshi. मैंने कई बार बताया, वह नाराज हो जाते थे । मैंने कहा कि आप मंत्री होकर जब भी बोलते हैं, आपने ड्रिंकिंग वाटर पर जो बोल था वह मन को छू गया था । वह बोले-नहीं, नहीं,मंत्री होकर मैं अच्छे काम कर रहा हूं, तुम लोग विरोधी हो, नहीं देखते हो । सर, उस दिन आपने ड्रिंकिंग वाटर अच्छा बोला था । There are certain issues which go beyond all this.

सर,हमारे लीडर ऑफ अपोजीशन है , I had the privilege of working under him, when he was the Chairman of the Standing Committee on Energy, for the first two years. मेरे लिए वह आज भी चेयमैन ही है, मैं आज भी उनको चेयमैन ही कहता हूं स्टेंडिग कमिटी ऑन एनर्जी के । मैं तो कहूंगा कि आप मंत्री भी रहे है, आप लीडर आफ अपोजीशन भी है, But those two years I have seen.और इन दोनों में कॉमन फीचर्स हैं । हम गुस्से में इतना कुछ बोलते है, अपने प्वाइंट्स खुद भी कन्विंस नहीं कर पाते है, लेकिन लीडर आफ दि हाऊस और लीडर आफ दि अपोजीशन बोलते ज्यादा नहीं है, हंसते रहते है, लेकिन अपनी बात पर अड़े रहते है, आधा इंच भी हटेंगे नहीं । दो एयरपोर्ट में से एक एयरपोर्ट भी नहीं देंगे हमको, हम जितना भी उनको समझाएं, चिल्लाएं, वे हसंते रहेंगे, चुपचाप बैठे रहेंगे,बोलेंगे कि वह तो होगा ही । So, that part of convincing people, I am not talking of Mr. Chidambaram. यशंवत सिन्हा साहब तो है, उनके साथ क्या कहा, यशंवत सिन्हा साहब उठ गए, हमको मालूम है । उनको बोलेंगे, हमारी राजनीति है, हमारी पॉलिसी है, तुम लोग हार गए, हम यह पॉलिसी करेंगे । I know he is coming with a dagger . हाथ में लेकर हमको मारेंगे । so,I am getting prepared लेकिन चिदम्बरम साहब की कुछ अलग ही बात है । पता भी नहीं चलेगा, साहब, ऐसी अच्छी-अच्छी मीठी-मीठी भाषा में, कब पीछे से छुरा घुंप जाएगा । so,the way of expressing,that part, I always will say that मेरी एक खामी है । हम बंगाल की जिस जगह से आते है, अभी बंगलादेशी मत बोल दीजिएगा, हम जिस डिस्ट्रिक्ट से आते है , वहां के लोग बहुत ब्लंट होते हैं । They are supposed to be very blunt . तो मेरे कहने का ढंग जरा बहुत ही अफेंसिव होता था, है, मैं मानता हूं और उसके लिए सब लोगों से मैं क्षमा मांग रहा हूं । But it was not for anything else जैसा मैंने कहा, Certain commitments are there. Apart from the anything else. party, emotional sentiments and attachments are there because the whole idea और इस बात से मैं अंत करूंगा अपनी बात का कि मेरे पिजा जी रेलवे में काम करते थे,मैं खुद पब्लिक सैक्टर में काम करता थ । तो कभी जब कोई बोलता है , It actually hits me because I have seen my father. In 1943, he joined as a Signal Inspector and he retired as a Signal Inspector in 1965. In 22 years, I had never seen him flinching an inch from his duty. तो कोई जब बोलता है कि सरकारी लोग काम नहीं करते है, तो मुझे बहुत अचंभा होता है । उस चीज का मेरा कन्विक्शन इस पार्लियामेंट में आकर बढ़ गया । मुझे नहीं मालूम था कि पार्लियामेंट का स्टाफ सरकारी है या प्राइवेट है, लेकिन जिस सिस्टम से यह काम करते हैं, 700 एम.पी.को सिक्युरिटी विभाग, वहां से शुरू कीजिए और यहां तक, एक-एक को कैसे पहचान लेते है । अगर कभी नहीं पहचान पाए तो आकर बोलते है, सर आइडेंटिटी कार्ड और कार्ड को देखने के बाद जिस तरह से कहते हैं –सॉरी सर, इस तरह से बिहेव करते हैं । इतने घंटों तक खड़े होते हैं और क्या भाषण हम देते है, हमको तो मालूम है । घंटों तक सुनना, खड़े होकर सुनना, जितने यहां है, बाहर, आपके पास, सामने या नीचे स्टाफ के लोग बैठते

है, The way they work सवेरे से रात तक, कहीं भी हो, डिबेट का next day तक पहुंचना, any paper,I don't know how many MPS can say कि कुछ चीज हमने टेबल आफिस से या किसी भी आफिस से मांगी, वह नहीं आई। all sorts of services, जो सब लोग देते हैं, शर्मा जी जो घूमते है,Any point any help. I do not know what is this. It is the system. मैंने एक सीख ली और I want to give my reconvincing words to both the sides, जब बाहर जाऊंगा, मैं अपने वर्कर्स के साथ जहां भी जाऊंगा , तो यह जरूर कहूंगा कि सिस्टम अगर सीखना है, सिक्युरिटी स्टाफ के लोगों ने तो जान दे दी, सिस्टम अगर सीखना है, ऐफिशिएंसी की बात अगर करनी है। It is not the question of क्या नाम आप देते है, Whether it is public or private, it is the system which works. Right from the Secretary-General who comes form a very senior position as Secretary from the Government Department बैठे रहते हैं, वहां से लेकर सब,सुनते रहते हैं,But the way the system works in Parliament, that system can work only out of certain commitment and that commitment does not come because of 'x' or'y' who is the owner, who is not the owner. It is the system. इस सिस्टम के बारे में,मैं जहां भी जाऊंगा, जरूर बोलूंगा वर्कर्स, ऐम्प्लाइज़ को कि देखो और वहां से सीखो, किसी बॉस के लिए नहीं, How the system works and that is how we have to function irrespective of ownership and that is what the commitment is. Thank you very much. माफी फिर से मांग रहा हूं , including from Mr. Chidambaram.

डा.कुमकुम राय(बिहार): सभापति महोदय,धन्यवाद । इस सदन में यह मेरा आखरी सम्बोधन है और सबसे पहले आज में अपनी पार्टी-राष्ट्रीय जनता दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष एंव वर्तमान रेल मंत्री आदरणीय श्री लालू प्रसाद यादव जी के प्रति अपना आभार व्यक्त करना चाहती हूं क्योंकि उनके कारण ही एक पिछड़े वर्ग की महिला को हिन्दुस्तान जैसे बड़े लोकतात्रिंक देश की सबसे बड़ी पंचायत का सदस्य बनने का गौरव मिला।

अपने विद्यार्थी जीवन में राज्य सभा या संसद के विषय में जो कुछ मैं किताबों, अखबारों और पत्रिकाओं में पढ़ा करती थी, जिन विद्वानों के विषय में अथवा मंत्री, प्रधान मंत्री, अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एंव स्पीकर की कार्यप्रणाली के विषय में पढ़ा करती थी, उनके बीच आ करके बैठने का , उनसे बातचीत करने का और उन्हें सुनने का इन छः वर्षो में मुझे जो मौका मिला, यह मेरी जिन्दगी का बहुत ही कीमती अनुभव है । इस सदन में जिस प्रकार से पूरे हिन्दुस्तान के सभी राज्यों एंव केन्द्र शासित प्रदेशों से प्रतिनिधिगण आते है, यह राष्ट्रीय एकता की एक जीती जागती मिसाल है । विभिन्न भाषा-भाषी, पहनावे –ओढ़ावे, रहन-सहन, खान-पान और विभिन्न विचारों के लोग जब यहां बैठ कर संवेत स्वर में बोलते है और जब अपने-अपने क्षेत्र की समस्याएं उठाते हैं, तो यहीं बैठे-बैठे पूरे हिन्दुस्तान को एक ही माला में पिरोने वाली कार्यवाही देखने का अवसर मिलता है, जो बहुत ही प्रशंसनीय है ।

आपकी विशेष कृपा से मैंने पिछले छः वर्षो में संसदीय कार्यवाही में कई बार हिस्सा लिया । वाद-विवाद,चर्चाएं, प्रश्न, पूरक प्रश्न अथवा विशेष उल्लेखों के माध्यम से आपने मुझे जो बार-बार बोलने और सीखने का अवसर दिया, उसके लिए मैं आपके प्रति अपना आभार व्यक्त करती हूं ।

जब मैं यहां आई थी, उस समय हमारे माननीय प्रधान मंत्री, आदरणीय श्री मनमोहन सिंह जी विपक्ष के नेता थे और आज वह हमारे प्रधान मंत्री है, लेकिन उस समय से लेकर अब तक कई बार मैंने उनके भाषणों को सुना,उनकी कार्य करने की शैली को देखा, उनकी सह्रदयता को पहचाना । मैं इसका एक उदाहरण देना चाहती हूं कि जब यूपीए की सरकार बनी और राष्ट्रपति भवन में शपथ ग्रहण समारोह था, उस समय वहां जाने का मुझे कोई आमंत्रण पत्र नहीं मिला । लेकिन मेरे लिए यह पहला मौका था और इस समारोह को मैं अपनी आंखों से देखना चाहती थी । इसके लिए मैं सीधे आदरणीय प्रधान मंत्री जी के आवास पर पहुंच गई और मैने एक स्लिप पर लिखकर अपनी इच्छा उन पर पहुंचाई और तुरन्त उन्होंने मेरे वहां जाने की व्यवस्था की दी । सारी जिन्दगी मैं इसके लिए उनका आभार मानूंगी । यह उनकी सह्रदयता का ही उदाहरण है, क्योंकि मैं उनकी पार्टी की नहीं थी, लेकिन जैसे ही मैंने अपना परिचय दिया वैसे ही उन्होंने वह मौका मेरे लिए उपलब्ध करा दिया ।

आदरणीय सभापति महोदय,एंव अन्य समस्त अधिकारीगणों ने भी समय-समय पर इस सदन की कार्यवाही में भाग लेने के लिए मुझे जो प्रोत्साहन दिया एंव हौसला अफज़ाई की,उसके लिए मैं इन तमामल लोगों का शुक्रिया अदा करना चाहती हूं ।

इस सदन में मेरे पार्टी के नेता, आदरणीय प्रो.राम देव भंडारी जी एंव हमारे मंत्री आदरणीय श्री प्रेम चन्द गुप्ता जी, इन्होंने भी समय-समय पर, रह-रह कर मेरे जैसे नौसिखिए को संसदीय कार्यप्रणाली के बारे में बार-बार समझाया-बुझाया और मुझे सीखने का मौका दिया, इसके लिए मैं तहे दिल से इनका शुक्रिया अदा करना चाहती हूं । संसदीय सचिवालय, राज्य सभा सचिवालय और साथ ही नोटिस ऑफिस के हमारे विशेष प्रशासनिक अधिकारी श्री मेहरा साहब से लेकर तमाम वॉच एंड वार्ड और तमाम कर्मचारी वर्ग जो यहां कार्यरत है...। इन लोगों ने भी समय-समय पर मार्ग-निर्देशन किया, सहयोग किया, सहायता की । इन तमाम लोगों का मैं तहेदिल से शुक्रिया अदा करना चाहती हूं। इस सदन में हमारे तमाम जो सांसदगण है, उन तमाम लोगों ने समय –समय पर मेरा हौंसला बढ़ाया, मेरी प्रशंस की, मेरे बोलने की शैली की प्रशंसा की, जिससे मैं इन 6 वर्षो में अपने संसदीय कार्य निष्पादन में सफल हो सकी । इन तमाम लोगों के लिए मेरे दिल में बहुत ही सम्मान की जगह है । सभापति महोदय, अपने इस अंतिम सम्बोधन में मैं दो बातों की तरफ माननीय प्रधान मंत्री जी और आपका भी ध्यान आकर्षित करना चाहती हूं । पिछले कुछ वर्षो से मैं यह देख रही हूं कि राज्य सभा में बड़े-बड़े औद्योगिक घराने और धन कुबेरों का आगमन बड़ी

सहजता से होता चला आ रहा है और एक राजनीतिक कार्यकर्ता जो अपनी सारी जिंदगी अपनी पार्टी विशेष्ज्ञ के लिए मेहनत करता है, राजनीतिक रूप से तमाम गतिविधियों में लिप्त रहता है, जिसके चलते वह अपने घर की जिम्मेदारी भी नहीं निभा पाता, लेकिन वह चूंकि धनवान नहीं होता, ऐसे कार्यकर्त्ता उपेक्षित रह जाते है और मुझे व्यक्तिगत रूप से लगता है कि यह लोकतत्र के लिए बड़ा खतरा उत्पन्न हो रहा है । इसलिए मैं तमाम लोगों का ध्यान इस बिन्दु की तरफ आकर्षित करना चाहती हूं और इसलिए मैं दिल से आपसे आग्रह करना चाहती हूं कि महिलाओं की आधी आबादी जो अब आधी नहीं रही, मैं इस समय पूर्व प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी जी के प्रति बहुत ही श्रद्वा के फूल चढ़ाकर कहना चाहती हूं कि जिस तरह उन्होंने पंचायत राज में 33 परसेंट आरक्षण देकर के निचले स्तरकी महिलाओं को राजनीतिक भागीदारी, समाज में नीति निर्माण करने वाली संस्था की भागीदारी करने मे उन्हें सफलता प्रदान की, मैं आप लोगों से करबद्व प्रार्थना करना चाहती हूं कि भले ही आप 33 न दें, संख्या 30 या 25 कर दें, लेकिन कानून अवश्य बना दें ताकि उतनी ही संख्या में निश्चित रूप से सारी पार्टियां अपनी पार्टी की महिला मेंबर्स को लोक सभा, राज्य सभा, विधान सभा और विधान परिषद के सदस्य के रूप में आगे बढ़ने का मौका दे सकें ।

महोदय,दूसरी बात, मैं यह कहना चाहती हूं कि जिनते भी सदस्य रिटायर होते हैं, निवर्तमान होते हैं, चूंकि उन्होंने इतनी उम्र तक राजनीति की है, इसलिए राजनीतिक गतिविधियों से दूर नहीं रह सकते । दिल्ली देश की राजधानी है और राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए उनका दिल्ली आना-जाना लगा रहता है । लेकिन निवर्तमान सांसदों के लिए यहां रहने की कोई सुविधा नहीं है । आवास समिति के अध्यक्ष महोदय, ने इन फ्लैटों का और बंगलों का इतना ज्यादा किराया बढ़ा दिया है कि कोई भी सांसद जब निवर्तमान हो जाएगा तो उसमें वह किराया मार्केट रेट से देकर के नहीं रह सकता । इसलिए मैं तमाम लोगों से अनुरोध करना चाहती हूं कि ऐसी व्यवस्था कीजिए ताकि कम शुल्क देकर, कम किराया दे कर के जो निवर्तमान सांसदगण है, वे जितने दिन रहना चाहें या यहां की गतिविधियों में भाग लेना चाहें, ले सकें । इसके लिए उनको आवास की सुविधा मुहैया कराई जाए ताकि वे राजनीतिक गतिविधियां जारी रख सकें । जाने-अनजाने पिछले 6 वर्षो में मुझसे जो भी गलतियां हुई है बोलने-चालने या किसी भी तरह से मुझसे कोई भी गलती हुई हो, किसी के दिल को ठेस लगी हो, उसके लिए मैं विनम्रता से क्षमा मांगती हूं और आप तमाम लोगों ने मुझे जो सहयोग दिया, उसके लिए मैं ताउम्र आभारी रहूंगी । धन्यवाद ।

श्री कृपाल परमार(हिमाचल प्रदेश)ः धन्यवाद सभापति महोदय,6 साल का वक्त कब गुजर गया पता ही नहीं चला ।

श्री सभापति: आज पता लग रहा है ।

श्री कृपाल परमार: कहते हैं कि अच्छा वक्त गुजरते वक्त पता नहीं लगता और बुरा वक्त पहाड़ बनकर सामने खड़ा हो जाता है। इसी तरीके से मेरे जिंदगी के बेहतरीन 6 साले आज सिमटकर 6 पल की तरह बन गए है और आपका प्यार , इस सदन का अनुभव और जहां की स्मृतियों की सम्पत्तियां आज समेटे मेरे आंचल में नही सिमट रही है। मैं सोचता हूं कि यह प्यार,ये स्मृतियां इसी सदन की धरोहर है, मैं क्यों न यह बांटकर चलूं। 6 साल पहले जब मैं इस सदन का सदस्य हुआ था , तो मेरे जहन में एक शायर की पंक्तियां को धती थी कि,

"घर से चला तो घर को मैं क्या देखता ,

कौन था जहां जो मेरा रास्ता देखता,

एक कदम भी न उठा पाता राहों में तेरी,

गर मैं घर से मंजिल का फासला देखता।"

मैंने एक गरीब परिवार में, दूरदराज गावं में पैदा होकर कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि मैं इस सदन का सदस्य बन पाऊंगा। मेरे उम्मीदों के पंख कभी भी इतने मजबूत नहीं रहे कि मैं कल्पनाओं की उड़ान भर कर कभी सपने में भी सोचता कि मैं दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत के उच्च सदन का सदस्य हो सकता है। मगर 2000 के मार्च मे मेरे लिए अनदेखे सपने सच हुए, जब मैं भगवान की कृपा से, अपने मां-बाप के आशीर्वाद से, राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ के मार्ग-दर्शन से और अपनी पार्टी के नेताओं की मदद में इस उच्च सदन का सदस्य हुआ। मैं धन्यवाद करना चाहता हूं उस वक्त के हमारे मुख्य मंत्री श्री प्रेम कुमार धूमल जी का, मैं धन्यवाद करना चाहता हूं गुजरात के मुख्य मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का, जो उस वक्त हिमाचल के प्रभारी थे, मैं धन्यवाद करना चाहता हूं देश के उस वक्त के प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी का,मैं धन्यवाद करना चाहता हूं उस वक्त हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष कुशाभाऊ ठाकरे जी का,आडवाणी जी का जिनके आशीर्वाद के कारण मुझे यहां आने का मौका मिला। मान्यवर, मैं उन तमाम विधायकों का भी धन्यवाद करता हूं जिन्होंने मेरे पक्ष में वोट देकर मुझे सदन में आने का मौका दिया। मैं कृतध्न कहलाऊंगा अगर मैं कांग्रेस के उन तीन अज्ञात विधायकों का धन्यवाद न करूं जिन्होंने मेरे पक्ष में क्रॉस वोटिंग करके मेरे यहां पहुंचने का रास्ता पार किया था, और मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है कि वे तीनों विधायक हिमाचल में बहुत फल-फूल रहे है और कुछ तो यहां सदन में आने की तैयारी भी कर रहे हैं। मान्यवर, मैंने इस सदन के अंदर मैंने राजनीति की मजबूरियां देखी। मान्यवर, मैंने इस सदन में लोकतंत्र की मजबूतियां देखी ,मैंने राजनैतिक दलों की निकटता देखी,मैंने राजनेताओं के दिलों में दूरियां देखी,मैंने यहां पर लोकतंत्र की जिम्मेवारियां देखी, मैंने यहां पर सरकार की दुश्वारियां भी देखी। यहां इस सदन में पहुंचकर, अपने आपको इस सदन का पात्र पाकर मैं धन्य हो गया। मैं उन तमाम कार्यकर्त्ताओं का एंव भारतयी जनता पार्टी के लोगों का भी

धन्यवाद करना चाहता हूं, जिन्होंने अथक मेहनत करके मुझे इस लायक बनाया कि मैं इस सदन में पहुंच सकूं । मान्यवर, इस सदन में आने के बाद मुझे इस सदन के अति ज्ञानी लोगों के विचार सुनने का मौका मिला । जिनका कभी टीवी के माध्यम से या अखबार के माध्यम से देखते थे,उनसे रूबरू होने का मौका मिला । एक दिन सदन में कहा जा रहा था कि यह सदन विश्वविद्यालय है । मैं अपने परिवार में, राजनीति में पहला व्यक्ति हूं और राज्य सभा का चुनाव मेरी ज़िंदगी का पहला चुनाव था । इसलिए मैं विश्वविद्यालय में इस तरह पहुंचा,जैसा कोई प्राइमरी का स्कूल पास किए बिना यहां पर सदस्य हो जाए । जब मैं यहां पर विद्वान लोगों को डिबेट सुनता था, तो मुझे लगता था कि मैं विश्वविद्यालय में हूं और जब सभापति जी डांट सुनता था तो मुझे लगता था कि मैं पाठशाला में हूं । माननीय सभापति जी, इस पाठशाला और उस पाठशाला में सिर्फ इतना अंतर था कि उस पाठशाला में मुझे पिछली बेंच पर खड़े होने के लिए कहा जाता था, जहां सभापति जी बैठने के लिए कहते थे । मुझे कई बार वेल में जाने का भी मौका मिला । कुंए में जब तक पानी रहेगा, कृपाल परमार को वहां वापस आने के लिए जाना ही पड़ेगा ।

मान्यवर, मुझे इस सदन का सदस्य होकर, इस लोकतंत्र के सबसे बड़े मंदिर पर आतंकवाद हमले का चश्मदीद गवाह बनने का भी मौका मिला । मैं धन्यवाद हूं, उन शहीद सुरक्षाममिर्यो का, जिनके कारण मैं उन दिन मौत का ग्रास बनते-बनते बचा। मैं धन्यवादी हूं,राज्य सभा सचिवालय का, जिनके कारण हमें यहां पर वाद-विवाद करने का मौका मिला । मैं धन्यवादी हूं, सभापति जी, और उपसभापति जी का, जिन्होंने गाहे-बगाहे, कभी अपनी मर्ज़ी से, कभी हमारी ज़बर्दस्ती से बोलने का मौका दिया ।एक शख्सियत, जिसका मैं अगर धन्यवाद न करूं, तो शायद मैं इस घर को छोड़का उस घर भी न जा पाऊं । वह शख्सियत है, मेरी पत्नी, जिसने मेरे परिवार की दोनो पीढ़ियों को-मेरे बच्चों और मेरे माता-पिता को-संभालकर मेरी राजनीति की डगर को आसान कर दिया । मैं धन्यवादी हूं, अपने तमाम दोस्तों का, सुरेश भरद्वाज जी का, अजय मारू जी का, सुरेन्द्र लाठ जी का, रूद्रनारायण पाणि जी का जिन्होंने व्हिप के नाते मेरे घटक में काम किया । इनकी उपस्थिति के कारण मुझे कई बार शाबासी मिली क्योंकि बैठते ये थे, शाबाशी मुझे मिलती थी, इसलिए मैं इनका भी धन्यवाद करता हूं ।

माननीय सभापति जी, जब मै आया था, तो खाली हाथ आया था । आज आपके इस सदन के सदस्यों की, आपकी स्मृतियों की सम्पत्ति का एक बहुत बड़ा खजाना लेकर वापस लौट रहा हूं । अंत में ,मैं यह कहना चाहता हूं कि

अलविदा तुमसे अगली मुलाकात तक है,

जुदाई है लेकिन ये इक रात तक है ।

डराएंगी क्या मुश्किलें रास्तों की,

इनायत खुदा की मेरी ज़ात तक है ।

अभी न मुकम्मल कहानी मेरी है,

मेरा किस्सा भारत की खिदमात तक है ।

मेरे साथ तुम्हारी ये यादें रहेंगी,

कमाई ये यादों की सौगात तक है ।

धन्यवाद । जह हिन्द ।

श्री विद्या सागर निषाद(बिहार): धन्यवाद सभापति महोदय, आज मुझे उस समय आपके आसन के द्वारा बोलने का मौका मिला, जब एक-तिहाई हम विदाई के अवसर पर है । महोदय, हमारे नेता माननीय लालू प्रसाद जी ने मुझ जैसे साधारण व्यक्ति, जो एक फिशरमैन हो, मछुआरा हो और गरीब परिवार से आया हो, उन्होंने मुझे इस वर्ष तक राज्य के अंदर केबिनेट का दर्जा देने का काम किया और मैं पहला व्यक्ति हूं जिसे बिहार के पैमाने पर, हमारे माननीय रेल मंत्री श्री लालू प्रसाद ने, जब वे वहां मुख्य मंत्री थे , केबिनेट का दर्जा देने का काम किया था । इस प्रकार फिशरमेन का पहला व्यक्ति मैं ही था । मैं अपने नेता, श्री लालू प्रसाद जी को धन्यवाद हूं क्योंकि मैंने कभी स्वप्न में नही सोचा था कि मैं भी राज्य सभा का सदस्य बन सकता हूं, एक फिशरमैन राज्य सभा का सदस्य बन सकता है, लेकिन उनकी बहुत बड़ी दूरदर्शिता, उनकी विद्वता, उनकी पहचान है कि ऐसे वर्ग के व्यक्ति को वहां से लाओं , जो वहां की समस्याओं के संबंध में बात रख सके । इसलिए मैं धन्यवाद देना चाहता हूं कि लालू प्रसाद जी ने हम जैसे व्यक्ति को यहां पहुंचाने का काम किया । महोदय, जब भी मुझे कुछ बोलने का मौका मिला, आपने मुझे जो प्यार दिया, आपने जो मोहब्बत दी, यह अपार है । इन दो सालों के दरमियान मुझे जो सीखने का मौका मिला, बड़े-बड़े विद्वानों , चाहे राजनीतिक नेता हो, चाहे साहित्यिक हों,चाहें दूरदर्शी हों, यह समूह जो यहां है, यह गुलाब के फूल की तरह खिला हुआ है । हरेक राज्य की भाषा, हरेक राज्य की बोली , हरेक राज्य की पहचान –सभी को मिलकर,एक जगह जुटकर, आज देश के पैमाने पर सोचने का जो मौका मिलआ और हम जैसे व्यक्ति को यह सब सुनने का मौका मिला, यह इतनी बड़ी सम्पत्ति मुझे मिली है, जो कभी मिलने वाली नहीं थी । हम जैसे व्यक्ति को यह सम्पत्ति देने वाले अगर कोई व्यक्ति हुए, तो वह लालू प्रसाद जी है ।

सभापति महोदय,मैं किन शब्दों में कहूं, आज हमारी विदाई है । पिछले दो वर्ष में जो ज्ञान मुझे प्राप्त हुआ है, मैंने कभी सोचा नहीं था कि हम उपराष्ट्रपति और सभापति जी के सामने अपनी बात रखेंगे, हम प्रधान मंत्री जी के बीच में रहेंगे और मौका मिले तो प्रधानमंत्री जी से हाथ मिलाएंगे, विरोधी दल के नेताओं के साथ बैठकर बात करेंगे-यह सौभाग्य मुझे कभी नहीं मिलता, लेकिन यह

सौभाग्य हमें लालू प्रसाद जी ने दिया है । हमारे जितने माननीय सदस्य है, विपक्ष में भी जो माननीय सदस्य है, बिहार में केबिनेट में हम भी थे, हमारे साथ भी थे, तो इन तमाम लोगों का प्यार और मोहब्बत जो मिला , यह अपार है, इसलिए मैं किन शब्दों का प्रयोग यहां करूं ?

महोदय, हम धन्यवाद देना चाहते हैं, हमारे सेक्रेटेरिएट के जो पदाधिकारीगण है, इनकी जो भावना है , इनके जो विचार है और नीचे के ऊपर तक जो भी कार्य करने वाले लोग है, वे बहुत योग्य है । अपर हाऊस की जो रूपरेखा है, वह अब प्रत्यक्ष मालूम पड़ रही है, इसलिए मैं तमाम माननीय सदस्यगण को भी धन्यवाद देना चाहता हूं कि आपने अपनी वाणी के द्वारा जो विचार सदन में रखे है,उनको भी मैंने ग्रहण करने का काम किया है । अंत में मैं कहना चाहता हूं कि जो माननीय सदस्य पूर्व में बोल चुके है कि जो सदस्य रिटायर होते हैं, उनके रहने की कोई व्यवस्था नहीं हो पाती है, मैं इस ओर पुनः ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि जो सदस्य रिटायर होते हैं, तो कम पैसे में उनके रहने की व्यवस्था हो । आदत तो अब दिल्ली की पड़ गई है, पार्लियामेंट की आदत पड़ गई है, वैसे हाल वैसी हस्ती में आने में उनको बहुत कठिनाई होगी, इसलिए जो सदस्या पहले बाल चुकी है, मैं चाहूंगा कि उस ओर मुखातिब होकर, हमारे देश के जो प्रधान मंत्री है, हमारे अन्य मंत्री है, आवास मंत्री है, सभी से मेरा आग्रह होगाकि जो बोला गया है, उस ओर मुखातिब होते हुए, उसको आगे बढ़ाने का काम करेंगे ।

साथ-साथ मैं निवेदन करना चाहता हूं कि रिटायर होने का मतलब सदा के लिए रिटायर नहीं है । हम यहां से जा रहे हैं, जो अनुभव हमने यहां राज्य सभा में, इस सदन में लिया है, इस अनुभव को अब हमें मौका मिलेगा कि हम अपने जिले में जाकर, अपने राज्य में जाकर उस चीज को कैसे रखें । यह सदन तो वह सदन है, जो लोक सभा के द्वारा पारित होने के बाद राज्य सभा में उस पर डिबेट होती है –ये सारी जो पुस्तकें मिली है, इस सारी चीज़ को हम कैसे समाज के बीच में,अपने राज्य की जनता के बीच में ले जाएं, यह हमारा संकल्प रहेगा कि यहां से जा ज्ञान हमें प्राप्त हुआ है, विद्वानों का बहुत बड़ा जो ज्ञान प्राप्त हुआ है, इस सारी चीज़ को लेकर हम अपने जिले में, अपने इलाके में, अपने देश के पैमाने पर जहां तक क्षमता होगी, हम देने का काम करेंगे । इसके साथ ही साथ मैं माननीय प्रधानमंत्री जी को भी धन्यवाद देना चाहता हूं कि जब-जब भी गेट पर, हमारा उनसे प्रणाम हुआ तो तब-तब मुझे उनसे हाथ मिलाने का अवसर मिला । हमारे परिवार के लोग शायद यह समझते है कि हमारे जैसे व्यक्ति का प्रधानमंत्री जी से हाथ मिलाना बहुत दुशवार होगा । यह सारी देन श्री लालू प्रसाद जी की है, जिन्होंने आज मुझे यहां तक पहुंचाया है । मैं इतना कहकर अपनी बात समाप्त करता हूं । नमस्कार ।

श्री वंसत चव्हाण(महाराष्ट्र)ः आदरणीय सभापति महोदय,मैं तो सदन में केवल दस महीने पहले ही आया था । इस सदन में, मेरा अभी एक साल भी पूरा नहीं हुआ है । श्री संजय निरूपम ने अपनी पार्टी छोड़ी थी और अपना इस्तीफा भी दे दिया था, जिसके कारण महाराष्ट्र से एक सीट पुनः

भरी जानी थी। मैंने महाराष्ट्र विधान मंडल में 25 साल तक काम किया है और वहां रहते हुए, मैंने कई जिम्मेदारियां भी निभाई है। इसलिए हमारे नेता श्री शरद पवार जी ने सबके सामने मेरा नाम रखा कि इनको हम वहां पर भेजते है। उस वक्त सभी पार्टियों ने निर्विरोध तौर से चुनकर, मुझे अकेले को यहां भेजा। जब उन्होंने मुझे यहां पर भेजा तो आपने मुझे उतना प्यार भी दिया।सभापति महोदय,आपने स्वंय मुझे प्यार दिया, उपसभापति जी ने दिया, सदन के नेता ने दिया, अन्य नेताओं ने दिया और सभी सहयोगियों ने भी अपना प्यार दिया। इन दस महीनों में भी मैं कुछ काम कर सका, कई बार अपनी बात यहां पर बोल सका और कुछ सीख सका। आज कल लाभ के पदों की बड़ी चर्चा हो रही है, जिसके कारण दुर्भाग्य से हमारी एक सदस्या को भी यहां से जाना पड़ा है। जिन दिन मैं यहां पर आया था तो उससे पहले मैं एक लाभ के पद पर था। मैं कृषि संशोधन और विकास का चेयरमैन था और केबिनेट का दर्जा प्राप्त था। यहां आने के बाद मैंने पवार साहब के साथ बैठकर जब चर्चा की तो मुझे पता चला कि इसके बारे में कुछ फैसला होना चाहिए। यहां आने से पहले मैंने अपने लाभ के पद से इस्तीफा दे दिया था और उसके साथ ही वहां का चॉर्ज भी अपने पास नहीं रखा,तभी मैं इस कानून से बच गया और मैं आपके साथ काम कर रहा हूं। मुझे यहां आकर यह एक मिसाल देनी पड़ी और उसके बाद मुझे काम करने का एक अच्छा मौका मिला। अब जब चुनाव हुए तो मेरे राज्य की विधान सभा ने,वहां के सदस्यों ने , एक बड़ी समझदारी का काम किया। वहां पर एक पार्टी ने दलों की संख्या के अनुसार अपने-अपने दल के सदस्यों को निर्विरोध तौर पर चुनकर राज्य सभा में भेजा है। इनमें केन्द्रीय मंत्री श्री सुशील शिन्दे, केन्द्रीय मंत्री श्री प्रफुल्ल पटेल जी, लोक सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष मनोहर जोशी जी, भाजपा के बाल आप्टे जी, राजीव शुक्ला जी और स्वंय मैं भी इनमें शामिल हूं। हम सब 6 लोग निर्विरोध तौर पर चुने गए है। और यहां आकर फिर से सदन में काम करेंगे। यह मेरे राज्य की विधान सभा के सदस्यों की समझदारी है, जो उन्होंने ऐसा किया। मैं इस सदन के माफर्त उनका बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता हूं कि उन्होंने इस मामले में बहुत अच्छा काम किया है। अन्य राज्यों में तो चुनाव होंगे, लेकिन हमारे यहां पर सभी नेताओं ने सदस्य संख्या के आधार पर एक साथ बैठकर अच्छी सूझबूझ का परिचय देते हुए हम लोगों को यहां पर पुनः सेवा के लिए भेजा है। मुझे उम्मीद है कि भविष्य में भी मुझे अच्छा मौका मिलेगा और मेरे हाथों से अच्छे काम होंगे। जो सदस्य यहां पर आ रहे है, उनके लिए मैं सिर्फ दो पंक्तियां कहना चाहता हूं, "आइए आपकी जरूरत है, राज्य सभा बहुत खूबसूरत है। आपको अच्छा प्यार मिलेगा, अच्छा काम करने का मौका मिलेगा।" जो जाने वाले है, मैं उनके लिए भी दो पंक्तियां कहता हूं, "जाओं कहीं भी सनम,तुम्हें इतनी कसम , हमें याद रखना।" धन्यवाद।

श्री मती जमना देवी बारूपाल(राजस्थान): माननीय सभापति जी, आपने मुझे सदस्यों की विदाई के समय पर, बोलने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपका आभार व्यक्त करती हूं और आपको धन्यवाद देती हूं। महोदय,सर्वप्रथम मैं अपने पूज्य पिता श्री पन्नालाल बारूपाल जी का

आभार व्यक्त करूंगी जिन्होंने मुझे बाल्यकाल से ही दीन-हीन मानव और दलितो की सेवा करने का पाठ पढ़ाया है । इसके बाद मैं राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्ष, श्रीमती सोनिया गांधी जी एंव श्री अशोक गहलौत जी का हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए,उनको धन्यवाद दूंगी, जिन्होंने मुझे भारतवर्ष के सर्वोच्च सदन में बुद्विजीवियों , विचारकों और विद्वानों की श्रेणी में बिठाया और उनके साथ-वाद-विवद में भागीदारी का मौका दिया । ये 6 वर्ष मेरे जीवन में सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथा सुखद अनुभूतियों के दिन रहे हैं । प्रभु ने मुझे अपने मुल्क और अपने दलितों के कार्य करने के लिए एक सुंदर समय दिया और मैंने विद्वानों, विधि- वक्ताओं तथा राज्यों से आए हुए जन-प्रतिनिधियों से बड़ी उपलब्धि हासिल करते हुए , अपने आपको गौरवान्ति अनुभव किया । संसदीय जीवन में, लोकतंत्र के इस महान मंच पर जहां महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जाती है, मैं पूर्व के सभापति जी को भी नहीं भुला पाऊंगी । परम आदरणीय और दयालु स्वभाव के हमारे प्रधानमंत्री, श्री मनमोहन सिंह जी आज हमारे सम्मुख विराजमान है, मैं उनको भी ह्रदय से बहुत आभर व्यक्त करती हूं । श्री प्रणब मुखर्जी, श्री हसंराज, भरद्वाज, डा.कर्ण सिंह, श्री अर्जुन सिंह और मेरे सम्मुख बैठे हुए श्री आर.के.धवन, श्री नारायणसामी, श्री आर.के.आनन्द, श्री पचौरी जी का भी मैं धन्यवाद करती हूं । मेरे जो बहनें यहां बैठी हैं- श्रीमती प्रभा ठाकुर जी, डा.कुमकुम राय जी, श्रीमती कमला मनहर जी – इन्होंने मेरा बहुत साथ दिया और मेरा मार्गदर्शन किया । मैं श्रीमती अम्बिका सोनी, श्री अहमद पटेल, श्रीमती रेणुका चौधरी, डा.टी.सुब्बारामी रेड्डे और श्रीमती प्रेमा करियप्पा जो मेरे पास बैठी है, इन सबकी शुक्रगुज़ार हूं कि इन्होंने मेरा बहुत साथ दिया और मेरा मार्गदर्शन किया ।

सभापति जी, मैं चारों तरफ से यही सुनती आई-श्री राजीव शुक्ल कहते-चाची, दर्डा जी कहते-दादी, अश्विनी जी कहते-अम्मा, प्रेमा जी कहतीं-मौसी,डा.दसारी नारायण राव कहते-अम्मा, धूत मियां कहते-बुआ, अन्य लोग कहते-दीदी-तब मैं कुछ क्षणों के लिए आत्मविभोर हो जाती थी और यह स्नेह भरा प्यार , ये शब्द, भंवरे की तरह गुंजर करके मरे कणों को सुख देते रहते थे । मैं भले ही आप लोगों से दूर चली जाऊंगी, लेकिन मेरे लिए आप सभी की आत्मीयता को भूल पाना इतना सरल नहीं होगा । हालांकि मुझे आप सबके साथ हाऊस के अंदर बैठने तथा बोलने का सौभाग्य केवल 6 बरस के लिए ही मिला, सही कहा जाए तो केवल 18 महीने का ही मिला, लेकिन हाऊस के उपर की दर्शक-दीर्घा में मैं 1952 से लेकर 1977 तक, 25 वर्षो तक, बराबर ग्रामीण क्षेत्रों के कांग्रेस के कार्यकर्त्ताओं को साथ लेकर आती रही और उन्हें पार्लियामेंट की कार्यवाही दिखायी रही और मैं भी देखती रही । उस वक्त पक्ष और विपक्ष की जो झड़पें होती थी, वे मर्यादा के दायरे में होती थी, लेकिन आज वे झड़पें कुछ और तरीके से होती है ।

सभापति जी , मैंने अपने पूज्य पिता के साथ,देश के करीब-करीब सभी महान व्यक्तियों और महान नेताओं के, बहुत करीब से दर्शन किए है । मैंने संविधान निर्माता,डा.भीमराव अम्बेडकर के दर्शन किए और कई बार उनसे रूबरू बाते की । मैं स्वतंत्र के प्रथम प्रधानमंत्री, श्री जवाहरलाल

नेहरू के साथ बराबर टेबल पर बैठकर बातें करती थी । भारत की विश्व-विख्यात प्रधानमंत्री,श्री मति इंदिरा गांधी जी जब प्रधानमंत्री नहीं बनी थी,उससे पहले हम उनको बीकानेर ले गए थे और हमने उनका स्वागत किया था । हमारे युवा प्रधानमंत्री, स्वर्गीय राजीव गांधी जी के साथ भी मैंने नज़दीक से काम किया हैं" । हम उनका हाथ पकड़ लेते थे, तो वे कहते थे-" हाथ छोड़ेगे तभी तो मैं पत्र पढूंगा" । उनके ये शब्द आज भी मेरी आंखों में पानी भर देते है । उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में और शहरी निकायों में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण देकर, महिलाओं का हौसला बुलंद कर दिया। आज देश के कोने-कोने से उनके प्रति श्रद्वा के शब्द अंकुरित होते हैं और आवाज़ आती है कि श्रीराजीव गांधी ने हम महिलाओं के लिए कितना बड़ा काम किया । मैं सेवा निवृत्त होने से पूर्व यह एक संदेश सदन में छोड़ कर जॉऊगी कि यदि राजीव गांधी जी की यादों को तरोताजा रखना है, तो महिला आरक्षण विधेयक संसद में पारित होना चाहिए । मैंने सदन में आकर क्षेत्रीय समस्याओं को रखा । प्रभु कृपा से मुझे इसमें थोड़ी-बहुत सफलता हासिल हुई । चार हजार करोड़ रूपए का लम्बित पड़ा बरसिंगसर नेवेली लिग्नाइट का काम चालू करके मेरी कांग्रेस सरकार ने मेरा हौसला बुलन्द किया । वे हमारे पास यहां बैठे या नहीं बैठे हैं,मैं पीठ के पीछे उनकी प्रशंसा करूंगी, मणि शंकर अय्यर जी की और मैडम सोनिया गांधी जी की,उन्होंने हमारे राजस्थान के बाड़मेर के एक सीमा क्षेत्र में आठ हजार करोड़ रूपए से भी अधिक क रिफाइनरी लगा कर हमारा हौसला बुलन्द किया है । जहां तक कोलायत और फलोदी की ब्रोड गेज लाइन लम्बित पड़ी थी, वह कार्य भी चालू हुआ है । शायद थोड़े दिनों में वह काम हो जाएगा ।

मैंने अपने संसदीय कोष से लड़कियों के स्कूलों के कमरों का विस्तार, सामुदायिक भवन, खेल-कूद के स्टेडियम, पानी और बिजली , होस्टल, इत्यादि जनहित के कार्यो को प्राथमिकता दी तथा ग्रामीण क्षेत्र की समस्याओं का समाधान किया ।

जब मैं सदन में प्रवेश करती , तो मुझे सभी का प्यार मिलता । आदरणीय मेरे सामने बैठी हुई पूर्व उपसभापति, नजमा जी, चाहे वह अम्मा कहने वाली सुषमा स्वराज जी, साथ में ही सभी सामने बैठने वाली फिल्मी सितारों की बडी-बडी हस्तियां,चाहे वे हेमा जी हों,या अन्य बहनें हों, जिन्होंने मुझे बहुत-बहुत ज्यादा प्यार दिया । मैं मेरे सामने बैठे हुए महासचिव योगेन्द्र नारायण जी का भी आभार व्यक्त करूंगी, जो न बोले, न मुस्कराए, न इशारा किया,न बतलाया, लेकिन उन्होंने आदर के साथ मेरा हौसला बढ़ाया । सम्मुख बैठे हुए मेरे भाई, मैं सोचूंगी कि मुझसे उम्र मे छोटे भाई कहूंगी, जो जँचेगा, चाहे इधर के लोग हों, चाहे उधर के लोग हों, मुझे 5 वर्ष तक बहुत साथ दिया । मैं इनको कभी भी नहीं भूला पाऊंगी ।यदि विद्वानों की सभा में भूले-बिसरे मुझसे कोई भी भूल-चूक हो गई हो, तो मैं तो नई आई थी, मुझे अपना समझ कर क्षमा करेंगे । मैं आपसे ऐसी याचना कर रही हूं । फिर कभी आप लोगों की याद आई, तो आपसे मिलने चली आऊंगी । मैं यहां की सभी यादों को संजी कर ले जाऊंगी और फिर कभी आप सब की याद

आई, तो मैं आपसे मिलने चली आऊंगी । मैं सिर्फ हाउस छोड़ कर जा रही हूं । अभी मुझमें जनहित,दलित, गरीब, शोषित महिलाओं के लिए काम करने के लिए बहुत शक्ति है । आज भी बेसहारा जीवनयापन करने वाली दलित महिलाएं अनेक प्रकार की घटनाओं को लेकर आती है, चाहे वे बलात्कार की घटनाएं हो, चाहे गांव में प्रभावशाली लोग उनकी जमीन छीन लेते हों, इस प्रकार वे लोग भीड़ लगाए रहते हैं । आज गांवों में बहुत घृणित कार्य होते हैं । लेकिन हम उनको गली-गली और पोक के सहारे ढूंढ नहीं पाते हैं । आज भी उनकी जमीनें छीनी जाती है आज भी उनके पैसे नहीं भरे जाते है । अगर गांव की एक महिला घुंघट में लिपटी जब अकेली आती है, तो भय लगता है किसी दूसरे को लगता है, तो वह सामाजिक भय लगता है और एक से दो साथ लेकर आती है, तो उनको खाने-पिलाने की कमी पूरी नहीं होती ।

आज 99 प्रतिशत शुगर की बीमारी हो रही है, कैंसर की बीमारी हो रही है । आज जब वे लोग आते है तो उनको न तो अस्पताल में जाने का रास्ता मिलता है और न होस्पिटल में जाकर फी दवाई लेने जैसी सुविधा मिलती है । वे भागे-भागे हम लोगों के पास ही आते हैं और उन दलितों तथा बेसहारों का ताँता लगा रहता है । मैं मेरे घर में उनकी सहायता करने के लिए काम करती हूं । पहले यह काम आजादी से पूर्व मेरे स्व. पिताश्री करते थे बौर बाल्य काल से मैं उनका सथ देती थी । आज मैं अकेले ही उन लोगें का काम करते हुए सहर्ष महसूस करती हूं क्योंकि"जियों, तो ऐसे जियो, मानों सेवा के लिए जियो, यदि मरना है, तो ऐसे पशुओं की तरह क्यों मरो, वक्त निकल जाता है हवाओं के झोंके में और कुछ पदचिन्हों को छोड़ कर जिया" । अब मैं इतना जरूर कहूंगी कि यहां से जाऊंगी तो आप लोगों का प्यार जरूर अखरेगा, लेकिन काम करने में इतनी व्यस्त हो जाऊंगी तो आप लोगों को याद करने के लिए समय निकालना पड़ेगा । वैसे बुरा न मानें, मुझ से पहले अभी कुमकुम राय जी ने दोहरा दिया कि अब आएंगे कैसे क्योंकि किराया इतना हो गया है कि पूर्व सांसद को रहने की प्रॉब्लम है ? अगर सही किराया लिया जाए तभी वह आ सकता है । मैं भी अपने सभी विद्वानों के दर्शन कर सकती हूं । अब ग्रामों की समस्या को आप तक लिखित में पहुंचा सकती हूं ।

दूसरी बात, मैं कहूंगी कि मैने इतने वर्षो तक सेवा की । कहां 52 का जमाना और कहां आज का जमाना ? जब पिता जी आजादी से पहले लड़ते थे, तब भी मैं उनके साथ थी, लेकिन इतने वर्षो में, यह 6 वर्ष का काल नहीं है, इसे 5 वर्ष 6 महीने का कहना चाहिए , इस में जो समय मिला, वह बहुत थोड़ा समय है । एक दलित महिला व काम करने वाली महिला को पुनः मौका मिलना चाहिए । लेकिन मै सोनिया गांधी जी पर बहुत विश्वास करती हूं, मनमोहन सिंह जी पर बहुत विश्वास करती हूं और कांग्रेस पार्टी पर विश्वास करती हूं । वह पार्टी जो निर्णय करेगी, जो हमें मार्गदर्शन देगी, हम उस के ऊपर काम करेंगे । हम तो फौज के सिपाही बनकर काम करेंगे और पार्टी का "बल्ले-बल्ले" कराएंगे ।

मैं पुनः सभी सांसदों को, चाहे वे इधर के हों या उधर के, चाहे सामने से हों या उधर से –सभी महानुभावों को धन्यवाद देती हूं। आदरणीय जसवन्त सिंह जी, विपक्ष के नेता हमारे राजस्थान प्रदेश के हैं, मैं उन को धन्यवाद दूंगी। चैयरमेन साहब को मैं किन शब्दों में धन्यवाद हूं। आप से तो बराबर 50 साल से जुड़ी हुई हूं। वह लाड़ भी करते है और कभी-कभी डांट भी देते है। जब डांट देते है तो सोचती हूं कि घर के दादा पोती-पोतियों को डांटने के लिए ही होते है। मैं इनकी बात का कभी भी बुरा नहीं मानती। अगर अपनी आत्मा से पूछेंगे तो शायद इन्होंने हमेशा डांटकर ही कहा कि तेरे को बोलना नहीं आता। आप सभी का बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री सभापति: प्रो.रामबख्श सिंह वर्मा।

प्रो.रामबख्श सिंह वर्मा(उत्तर प्रदेश): माननीय उपसभापति जी, मैंने आप का आभारी हूं कि इस महान सदन से सेवानिवृत्ति के समय,विदाई के समय, आप ने मुझे बोलने का अवसर प्रदान किया। मैं विदाई के संबंध बोलू, उस से पहले उन माननीय सदस्यों को ह्रदय से बधाई देना चाहता हूं जो पुनः चुनकर आए है, इस महान सदल के दोबारा सदस्य बन गए है या आने वाली 28 मार्च को पुनः निर्वाचित होकर इस महान सदन के सदस्य बनेंगे। मैं उन्हें ह्रदय की गहराइयों से हार्दिक बधाई देता हूं।

माननीय सभापति जी, मैं 12 वर्ष तक लगातर इस महान सदन का सदस्य रहा हूं। इस अंतराल में मैंने इस महान सदन की पंरपराओं से, इस सदन की तमाम संसदीय समितियों के माध्यम से बहुत कुछ सीखा है। अपने देश के बारे में, अपने भारत के बारे में भी मेरी समझ बेहतर बनी है मेरे अंतर्ज्ञान में भी कुछ वृद्धि हुई है। मैं अपनी पार्टी के माननीय नेताओं की कृपा से कई देशों में संसदीय समितियों के माध्यम से जा सका हूं। मैं अपने नेता माननीय डा.मुरली मनोहर जोशी जी के साथ विश्व की सबसे बड़ी पंचायत यू.एन.ओ.के स्पेशल सैशल में भी शामिल हुआ हूं। इस तरह से इस अन्तराल में इस विश्व का भी ज्ञान कुछ बढ़ा है।

माननीय सभापति जी, मेरे लिए इस महान सदन का एक सदस्य बनना एक महान उपलब्धि के समान है। मैं एक अत्यंत साधारण किसान परिवार से आता हूं। मेरे परिवार में मुझसे पूर्व कोई भी व्यक्ति राजनीति में किसी भी पद पर नहीं रहा है कोई ग्राम प्रधान भी नहीं रहा है। ऐसे साधारण परिवार के एक व्यक्ति को मेरी पार्टी ने इस सदन में एक बार नहीं, बल्कि दो-दो बार भेजा ,उसे अवसर प्रदान किया है। मैं अपनी पार्टी के नेताओं के प्रति ह्रदय से आभार व्यक्त करता हूं।

महोदय,पहली बार मैं जब विधान सभा का चुनाव मात्र 218 मतो से हार गया था और मुझे लगा था कि मुझे गलत तरह से हराया गया, तो मैं अपने नेताओं के पास यह कहने के लिए पहुंचा कि मुझे कुछ आर्थिक मदद दे दो, जिससे मैं हाई कोर्ट में पेटीशन कर सकूं। उस समय माननीय कलराज मिश्र जी, जो हमारी आगे वाली सीट पर बैठे हुए है, प्रदेश अध्यक्ष थे। मैं इनके पास पहुंचा और कहा कि हमें कुछ आर्थिक मदद दे दो। इस पर माननीय मिश्र जी ने कहा कि मैं सोचूंगा , विचार करूंगा।

माननीय मिश्र जी ने मुझे पैसा तो नहीं दिया, लेकिन मेरी वकालत करके मुझे इस सदन में भिजवा दिया । इन्होंने कहां-कहां मेरी वकालत की, मुझे मालूम नही है, लेकिन आदरणीय मिश्र जी यहां बैठे हुए है, मैं उनके प्रति आभार व्यक्त करता हूं ।

माननीय सभापति जी, इस सदन में रहकर मेरे संसदीय ज्ञान में कुछ इजाफा हुआ है । मैं यह महूसस करता हूं और मैं कहना भी चाहता हूं कि इस महान सदन में जो संसदीय ज्ञान में निष्णात् है, महान विद्वान है, उनको अवसर मिलना चाहिए। लेकिन यदि योग्यता मे कुछ छूट भी देनी पड़े तो जो अनुसूचति जाति के बंधु है, जो जनजाति के बंधु है,जो पिछड़े वर्गो के लोग है और विशेषकर जो महिलाएं है,उनको कुछ विशेष अवसर मिले, तो मैं समझता हूं कि यह सदन , जो कि हमारे देश का प्रतिबिम्ब है,हमारे राष्ट्र का प्रतिबिम्ब है, शायद इसमें बेहतर प्रतिनिधित्व हो सकेंगा । ऐसा मेरा व्यक्तिगत विचार है ।

माननीय सभापति जी, मेरे इन 12 वर्षो के कार्यकाल में मेरी पार्टी ने मुझे कुछ दायित्व सौंपे । मैं नहीं जानता कि मैं अपने उन दायित्व का निर्वहन सफलतापूर्व कर सका हूं या नहीं कर सका हूं । उसकस आकलन मेरी पार्टी के नेतागण करेंगे । परन्तु मैं इतना जरूर कह सकता हूं कि मैंने जब कभी बोलने की इच्छा प्रकट की, तो मेरे नेताओं ने मुझे अवसर दिया है । अगर मैने सचेतक के रूप में या संसदीय सचिव के रूप में भी कोई बात की है, तो मेरे नेताओं ने मेरी बातों को सुना है । एक दिन जब हमारे सदन के प्रतिपक्ष के नेता माननीय जसवन्त सिंह जी से मैं कुद बात कर रहा था, तो उन्होंने मेरे कंधे पर जो प्यार की थपकी दी, तो मुझे ऐसा लगा कि जैसे मैं तीसरी बार भी राज्य सभा में आ गया हूं । मैं उनके इस स्नेह को कभी भुला नहीं पाउंगा। उपनेता बहन श्रीमती सुषमा स्वराज जी ने मुझे भविष्य के लिए कुछ इंगित किया है और मेरा मार्गदर्शन किया है । मैं अपनी पार्टी के नेताओं के प्रति, माननीय जसवन्त सिंह जी, माननीय श्रीमती सुषमा स्वराज जी, माननीय कलराज मिश्र जी और जो भी नेता है, उनके प्रति आभार व्यक्त करता हूं कि इस बीच उन्होंने हमारा मार्गदर्शन किया ।

वैसे माननीय सभापति जी, मुझे लगता नहीं है कि मैं रिटायर हो गया हूं । मुझे लगता है कि मेरे बहुत से काम,जो 12 वर्षो से अभी भी स्थगित पड़े हुए है, उन्हे करने का मुझे मौका मिलेगा । मेरी पार्टी जो दायित्व मुझे सौंपेगी, ज्यादा समय होने के कारण मैं बेहतर तरीके से उनको निर्वहन कर सकूंगा ।

माननीय सभापति जी, यह माननीय सदन मुझे लगता है, जैसे मेरे परिवार के समान है । मैं यह कहना चाहता हूं कि इन 12 वर्षो में जाने-अनजाने में मुझसे कुछ गल्तियां हुई हों, आप सदन के संरक्षक है, आपके माध्यम से मैं उन गल्तियों के लिए क्षमा चाहता हूं । मुझे आप सबका प्यार मिला है, स्नेह मिला है ।

माननीय सभापति जी, आपके बारे में मुझे विशेष रूप से एक बात कहनी है । जब आप उपराष्ट्रपति के पद पर निर्वाचित हुए, मैं अपनी बात कह रहा हूं, मुझे लग रहा था कि मेरी अपनी पार्टी का एक व्यक्ति अब उपराष्ट्रपति है और शायद हमें कुछ कंसेशन मिलेगा, लेकिन मैंने पाया कि जब कभी मैंने कोशिश की , तो आपके व्यवहार से लगा कि आपसे मुझे कोई कंसेशन नहीं मिलेगा । मुझे बाद में यह समझ में आयाकि आपकी मजबूरी है, क्योंकि आप जिस महान पद पर है , उस पर रहकर आपको निष्पक्ष कार्य करना, व्यवहार करना आपके लिए उचित होगा । यह बात मैं काफी बाद में समझ पाया और फिर मुझे यह भी प्रतीत हुआ कि आप जितने ऊपर से कठोर लगते है, अंदर से शायद उतने कठोर नहीं है । मुझे लगा कि आपका दिल एक कुंभकार के समान है, जो ऊपर से जो ठोंकता है, लेकिन अंदर से सहारा देता है ताकि घडा सुडौल बन सके । आपने अवसर पड़ने पर मुझे अवसर भी दिया है, मौका भी दिया है । मैं आपको विलंब से समझ पाया , इसके लिए मैं आपसे क्षमा चाहता हूं । आपने तो वही किया, जो कि इस महान कुर्सी पर बैठे हुए एक महान व्यक्ति को करना चाहिए । मैंने आपसे काफी सीखा है और अपने जीवन में उसका उतारा है ।

1.00 P.M

माननीय सभापति जी,आदरीण रहमान जी, जो उपसभापति जी है, यह भी कभी-कभी कठोर हो जाते है,लेकिन मैंने देखा है कि इनके व्यवहार में एक गीत जैसा हैकि" न न करके प्यार तुम्हीं से कर बैठे", आप न न करते रहते हैं, लेकिन अगर कहा जाए कि साहब,दो मिनट दे दीजिए, एक मिनट ही दे दीजिए, तो अंत में एडजस्ट कर लेते है । यह मैंने इनके व्यवहार में पाया है । मैं उनके प्रति भी अपना आभार व्यक्त करता हैं । इसके साथ ही मैं आभार व्यक्त करता हैं अपने सेक्रेटरी जनरल के प्रति, सभी अधिकारी गणों के प्रति । मैंने अपने जीवने में इतने योग्य , इतने एक्सपर्ट, इतने कार्य के प्रति समर्पित , कमिटेड लोगों को नहीं देखा है । मैं उत्तर प्रदेश की विधान सभा का दो बार सदस्य रहा हूं, वहां के सचिवाल के लोगों से मिला हूं, लेकिन जितने प्रोफेशनल लोग इस महान सदन के सचिवालय में है, उतने प्रोफेशनल लोगों से जिंदगी में मुझे कभी वास्ता नहीं पड़ा है । मैं अभी भी एक महाविद्यालय का प्रिंसिपल हूं, अभी अगर चाहूं तो दो-तीन साल तक रह सकता हूं हमारा विश्वविद्यालय से काम पड़ता है, लेकिन इस तरह के समर्पित लोग मुझे जीवन में नहीं मिले हैं । इसे मैं विश्वास-पूर्वक कह सकता हूं ।

माननीय सभापति जी, मैंने जैसा कहा है, मुझे नहीं लगता कि मैं रिटायर हो रहा हूं, हमारे लिए यह सदन एक परिवार की तरह रहा है, हमारे लिए एक पाठशाला के समान रहा है । दिल के किसी कोने में कुछ न कुछ तो कसक है और यहां से जाते समय इस कसक के लिए मैं इस देश के महान साहित्यकार के शब्दों का उल्लेख करूंगा । वैसे तो मैं विज्ञान का विद्यार्थी रहा हूं,मैं आदरणीय कृपाल परमार की तरह शेरो-शायरी में तो अपनी बात नहीं कह पाता, लेकिन मेरे मन में जो भावना है, जैसे इस देश के महान साहित्यकार, संत तुलसी दास जी ने अपनी रामायण की एक चौपाई में कहा है, मुझे लगता है कि अगर उसे मैं आपके बीच में कहूगा, तो मेरे मन का भाव प्रगट हो जाएगा ।

उन्होंने कहा है कि जब कुद लोग मिलते है , तो सुख नहीं मिला, दुख मिलता है, लेकिन कुछ लोगों से जब बिछुड़ते है तो सुख नहीं मिलता है, दुख मिलता है :-

मिलत एक दारूण दुख देई।
बिछुड़त एक प्राण हर लेई।

माननीय सभापति जी, मुझे लगता है, मेरी वहीं अवस्था है। आपने मुझ अपनी बात कहने के लिए जो अवसर दिया है, इसके लिए मैं पुनः ह्रदय से आभार व्यक्त करता हूं। धन्यवाद।

श्री सभापति: पांच माननीय सदस्य और है, जो इस विषय पर अपने विचार रखना चाहते है, लेकिन प्रधानमंत्री जी को किसी आवश्यक कार्य से जाना है,इसलिए आपकी अनुमति से मैं प्रधानमंत्री जी से निवेदन करूंगा कि वे अपने विचार रखें।

THE PRIME MINISTER (DR. MANMOHAN SINGH): Mr. Chairman, Sir, I join you, the hon. Leader of the Opposition and all other Members who have spoken in paying tribute to our retiring colleagues. Some, of course, have been re-elected. Some more, I believe, are likely to be re-elected, but for those who will not be coming back, I do not believe that this is the end of their political career. I sincerely hope that they will continue to serve our country in diverse ways with the same zeal, with the same commitment that has been on display in this august House.

Mr. Chairman, Sir, Rajya Sabha is a unique institution. It is an epitome of change with continuity. Every now and then, some Members come, some members go, but the Rajya Sabha retains its essential stabilising character. And, as I reflect on the last 15 years that I have been a Member of this House—I have sat on the Opposition Benches, now on the Treasury Benches and earlier also—I recall a sense of pride that over a period of time, the quality of debates in this House has gone up. There are, of course, moments of great tension. We are living in an age of competitive politics, and sometimes, considerations of competitive politics drive us to pathways which, probably, do not do us as much credit as parliamentarians as we would like. But, these are aberrations and what gives me supreme confidence about the viability of our polity is that even after some very tense moments, Members come back to their normal ways of doing business, despite all the controversies. These are characteristics of a parliamentary system. We retain respect for each other's views, values, and I believe that augurs well for our parliamentary democracy.

Those Members, who will be leaving, have enriched our polity by their contribution. Who can forget the contribution of Shri Nilotpal Basu, or for that matter, Shri Dipankar Mukherjee? Even when we are on the different sides, the issues that they bring to focus in this House are the issues of social justice, the issues of regional balance issues relating to the plight of the poorest sections of our society. These are issues which, I think, will shape, have shaped, the course of political debate in our country. These are issues which are of great importance and our House is richer because we have had such august presentations of these underlying concerns which are essential to take on board if our polity is to grow and flourish in years to come.

Sir, with these words, I once again join you, the hon. Leader of the Opposition, and all other colleagues in wishing our retiring colleagues Godspeed. May God bless you all!

SHRIMATI VANGA GEETHA(Andhra Pradesh): Sir, because hon. Prime Minister is leaving, I want to request, in may concluding remarks, for the Women's Reservation Bill. I thought that this Bill would be passed in my tenure. But, I am very sorry to say that it has not been passed. Sir, through you, I request the hon. Prime Minister to kindly make efforts to pass the Women Reservation Bill in the near future.

DR. MANMOHAN SINGH: Mr. Chairman, Sir, as a tribute to the retiring women Members of our House I wish to assure all our countrymen, through you and through this House, that our Government remains firmly committed to ensuring thai the Bill seeking reservation for women in the State Legislatures and in Parliament should be passed as early as possible.

SHRI RAMA MUNI REDDY SIRIGIREDDY (Andhra Pradesh): Hon Chairman, Sir,

मूकम करोति वाचातभ् पंगुम लंघयते गिरिम ।

यत् कृपा तमहम् वन्द् परमानन्दं माधवम् ।

You make a dumb man speak, you make a limping man climb a hill with your divine grace; my salutations to you, my LORD KRISHNA.

Sir, it was a great privlege for me to be in this Upper House of the Parliament of the world's largest democracy. Sir, back in the 80's, I had

the opportunity to serve my home State, Andhra Pradesh, under the leadership and reign of great Telugu Pride Late Nandamuri Tanik Rama Rao, as the Health Minister, and, after 15 years, I got an opportunity to serve my nation as a Member of the Rajya Sabha. On this occasion, I thank my dynamic leader Shri Chandra Babu Naidu for having given me this opportunity.

Sir, these six years of my tenure have been the most valuable times in my life as these years have given me great memories as well as taught me much more. Sir, I would like to share one of these memories. Sir, in response to my Private Members' Resolution on Population Control, the then Prime Minister, Shri Atal Behari Vajpayeeji, gave the reply. This was for the first time in the history of Indian Parliament, that the Prime Minister gave a reply to a Private Member's Resolution and, I am privileged that it happened on my Resolution.

Sir, I have learnt so much from the debates that went on during the Sessions, in a few of which I had also participated. Sir, I have been here and I have witnessed the indelible courage and stability that we possess during any kind of crisis, an example being the terrorists' attack on our Parliament in December, 2001.

Sir, today, I am glad to announce that I am very content with the service that I have rendered from this post to my nation at large, to my State and to my own District. Sir, I think, this is not retirement. This is just a change because in public life, there is no retirement. As far as we are in public life, we are in the service of our nation, of our State or our District, and, I look forward to another such opportunity to serve.

Sir, I have one request. Hon. Chairman, Sir, for the last three years, we have been desiring to speak in Telugu but there is no Telugu interpreter. I request, Mr. Chairman, Sir, to please appoint one Telugu interpreter as early as possible. This is my last request. Lastly, I will speak in Telugu.

Thank you. धन्यवाद ।

SHRI MANOJ BHATTACHARYA (West Bengal): Mr. Chairman, Sir, I will take two minutes. Sir, I would like to express my gratitude to all my hon. colleagues and the Secretariat, particularly, the Reporters who have kindly tolerated me because mostly I got a chance to speak only at the end of the debate, and because of the time constraint, I always had to

speak in a very hurried manner. And, Sir, I am grateful to these friends of ours that they have mostly been kind to note down the points that I have raised. Sir, I joined this House at a very crucial moment of Indian politics, and I have experienced something memorable. I have tried to perform my responsibility, the responsibility that was bestowed upon me by the Left Front of West Bengal. I have always tried to put forward the points keeping in mind the paramount importance of protecting the rights of the downtrodden people of this country.

[MR. DEPUTY CHAIRMAN in the Chair]

I am not to evalute myself; the posterity will evaluate how much I could. But, Sir, I would say that the situation today—even though there is a sea change in the situation—is a matter of very serious concern. Even now, I am quite dismayed that the way the problems of the downtrodden people of this country ought to be addressed, the enthusiasm, the zeal and the commitment what we should exhibit, perhaps, we have not been able to exhibit that commitment. Sir, I am concerned more since unless we do it,perhaps, the situation in the country will become further bleak I wish that this august House will continue to contribute for the best cause of the poor people of this country, the majority of this country, and prosperity of the country will be ensured. With these words, Sir, I once again express my gratitude to you. You need not ring the bell today.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I will not.

SHRI MANOJ BHATTACHARYA: I am sure that we would be maintaining a good relationship even though I am leaving this House tomorrow. Thank you very much, Sir.

SHRIMATI VANGA GEETHA: Thank you, Sir, for giving me this opportunity to say a few words. Sir, at the outset, I wish to say that I am greatly indebted and owe a lot to the founder President of the Telugu Desam Party and former Chief Minister, Shri Nandamuri Taraka Rama Rao. I am also grateful to the President of the Telugu Desam Party, Shri N. Chandra Babu Naidu, who elevated me to this position, cooperated and encouraged me to discharge my duties. I am also immensely thankful to the hon. Chairman of Rajya Sabha, Shri Bhairon Singh Shekhawatji, and former Chairman late Shri Krishan Kantji. I am also grateful to the Deputy Chairman of Rajya Sabha, Shri K. Rehman Khanji and former Deputy

Chairman, Shrimati Najma Heptullaji and our Leader of the Telugu Desam Party in Rajya Sabha, Shri Ravula Chandra Sekar Reddyji and other colleagues of the Telugu Desam Party and all the Members of the Rajya Sabha and the Secretary-General of Rajya Sabha and the entire staff of Rajya Sabha who have all cooperated and guided me in giving time to raise many issues and also to complete my tenure successfully as a Member of Parliament. Sir, I am also thankful to the people of the East Godavari District, Telugu Desam Party leaders, members and my family members who have extended unstinted cooperation to me till I complete my tenure.

Sir, as a woman Member, I would like to say a few words about the women. It is my duty and responsibility to mention about the women. In our country, the women have been respected since ancient times. The woman plays an important role in the success of every man, as a mother, as a wife, as a daughter and as a sister. Sir, even though women are educated and empowered to a certain extent, they are yet to attain some respectful life—economically, socially and politically. At present, women are facing so many problems. Crime against women is rising day by day. We are reading daily in the newspapers that girls are being abducted, sold and have been forced into prostitution. They are insulted, ill-treated, humiliated and exploited. Sir, innocent girls are becoming the victims of eve-teasing, rape and abduction. This amply shows how women's rights are violated. Women's rights are nothing but human rights.

Sir, the Father of the Nation, Mahatma Gandhiji, said, "We get the real independence, when a woman walks on the street at midnight to reach her home. Then only, we proudly say that we have attained the complete and real independence." But even now, we are observing that without any assistance women are not reaching home safely even in the daylight.

Sir, I request the hon. Members, particularly women Members, to raise their voice in the House about the problems they notice in the society to get immediate justice. We are the representatives of the women folk. We have to collectively fight against the problems being faced by women. One woman should cooperate another woman in the fight for justice. We should fight for the empowerment of women to get economical, social and political status.

Sir, again, I would like to express my views on the Women Reservation Bill. I thought that the Bill would be passed during my tenure, but, unfortunately, it did not happen.

Last but not least, during my tenure as a Member of this august House, if I committed anything wrong to anybody, I request you all to forgive me and extend your cooperation.

Sir, I thank particularly our Parliamentary Affairs Minister, Shri Suresh Pachouri, the Leader of Opposition, Shri Jaswant Singh, and other Members who supported me in discharging my duties as a Member.

Sir, I am leaving this House with heavy heart, not because of sadness, not because of pain, but because of full of enlightenment, full of encouragement, and full of your wishes and blessings.

Finally, I would like to say that I am not born as a Member of Parliament; I am not born as a Zila Parishad Chairman; I am not born as a political leader; I am not born as a wife or a mother; but I can proudly say that I am born as an Indian woman. Until my last breath, I would fight for the cause of women, poor and needy people and for the heritage and culture of my India.

Thank you, Sir, Jai Hind.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I wish you all the best for your fight.

SHRIMATI VANGA GEETHA: Sir, I am also grateful to Mr. Narayanasamy. He always interrupts, but makes issues very enlightening.

श्री वीरभद्र सिंह(उड़ीसा): उपसभापति महोदय,मैं जब 6 साल पहले राज्य सभा में आया, तब मुझे बहुत खुशी हुई, लेकिन उसके साथ दुख भी हुआ कि मैं किस भाषा में बोलूं । मैं ट्राइबल कम्यूनिटी से आया था, मेरी मदर को को रीजनत लेंग्अगुएज भी नहीं आती थी, लेकिन पढ़ते-पढ़ते रीजनल लेंग्अगुएज के बारे में मालूम हो गया, नेशनल लेंग्अगुएज भी थोड़ी-थोड़ी आ गयी, किन्तु फिर भी मन मे यह शंका थी कि कहीं गलती न हो जाए । इसलिए पहले तो बोलने में भी मुझे संकोच होता था, अगर अंग्रेजी में बोलूं, तो वह तो बहुत कठिनाई की बात है । फिर भी मैंने कोशिश की , मेरे मन में जो इरादा था, उसको एक्सप्रेस करने की ।यहां जो सीनियर लोग थे, पर्टिकुलरली मेरे सामने

बैठे हैं,कश्मीर के राजकुमा- जो हम पहले कभी सोचते थे—डा. कर्ण सिंह जी, मैं जब vani Bihar में एमए कर रहा था, उस समय वे हमारे कन्वोकेशन में वहां स्पैशल गेस्ट बनाकर आए थे । मैंने वहां उनकी स्पीच सुनी । यहां आते-आते उनका जो प्यार हमें मिला, मेरी पगड़ी देखकर वे हमेशा एक रिमार्क करते थे, उन राइटर का नाम मुझे याद नहीं है, आप बता देंगे तो मैं खुश हो जाऊंगा, लेकिन मेरे जैसे एक आदिवासी लड़के को, डा.कर्ण सिंह जैसे विद्वान आदमी से सर्टिफिकेट मिल जाएगा ऐसा मैंने कभी नहीं सोचा था । जब भी हमारी मुलाकत होती थी, चाहे सेंट्रल हॉल में हो, कॉरिडोर में हो या कहीं भी हो,तो वे मुस्कुराते थे और हमें उस कवि की याद दिला देते थे । मुझे उस कवि का नाम याद नहीं आ रहा है ।

डा.कर्ण सिंह(राष्ट्रीय राजधनी क्षेत्र, दिल्ली): सुब्रमण्यम भारती ।

श्री वीरभ्रद्र सिंह : जी हां, सुब्रमण्यम भारती- तो मुझे वहां से यह प्रेरणा मिली कि सुब्रमण्यम भारती जब इतने बड़े कवि बने, तो मैं भी क्यों नहीं कुछ बन सकता हूं ? इसलिए मैंने बोलने का अभ्यास किया । धीरे-धीरे हिंदी में भी बोलने लगा और अंग्रेजी में भी कभी-कभी बोला, जब मैंने यहां चर्चाओं में भाग लिया । जब सीनियर्स से मेरी मुलाकात हुई , तो मैंने बहुत कुछ सीखा । मेरे लीडर बीजू पटनायक जी कहते थे –

"ऐसी बात बोलो, जैसे कोई न बोले झूठ,
ऐसा काम करो, जिसे कोई न बोले छोट और
ऐसी जगह पर बैठो, जहां से कोई न बोले उठ । "

यह मेरे नेता का कहना था । इसलिए मैंने पालिटिक्स में कभी झूठ बोलने का साहस ही नहीं किया । जब मैं पहली बार मिनिस्टरी बना, तो मेरे गुरूजी ने मुझसे एक दस्तखत लिया । मैंने कलम निकाली , तो वे बोले कि मैं कलम से तुम्हारे दस्तखत नहीं चाहता । उन्होंने एक पिन दिया और पिन से ब्लड निकाला और सिर्फ "ब" लिखा । गुरूजी ने बचपन से लेकर बड़े होने तक मुझे एक आदिवासी लड़के से समाज में रहने वाला एक इसानं बनाया, तो उन गुरूजी से मैंने पूछा कि is it possible ? क्या यह संभव है ? तो उन्होंने कहा कि जब संभव न हो, तब राजनीति छोड़ देना । मैंने बी.एड.भी किया था । मैं गांव के स्कूल में पहले हेडमास्टर भी था । उन्होंने मुझे कहा कि जब राजनीति में संभव न हो, तो भी झूठ नहीं बोलना, उड़िया में लिखा था-जिसका हिन्दी अनुवाद है ।

झूठ नहीं बोलना, रिश्वत नहीं लेना ।
मदे मात्सर्य में नहीं फंसना ।

ये तीन बातें राजनीति में संभव है क्या, मैंने प्रशन किया । उन्होंने कहा कि नहीं है, तो राजनीति

छोड़ देना । उन्होंने मुझे बताया कि तुमने जो बी.एड.किया है , this B.Ed. Certificate will save your life as a lifeboat when there will be a shipwreck in your political career. When there will be a shipwreck in your political career, this B.Ed, certificate will save your life as a lifeboat. तो आप बिल्कुल झूठ मत बोलना । मैंने कोशिश की । बहुत तकलीफ हुई, लेकिन फिर भी आनंद आया । मैंने कभी सोचा नहीं था कि मैं राज्य सभा में आऊंगा । मै यह कहने में नहीं हिचकिचाऊंगा कि मेरे बाएं तरफ जो बैठे हैं, सीनियर आई.ए.एस.अफसर है । मेरी उनसे मुलाकात नहीं थी, लेकिन मेरा जो चरित्र था,मैं कितना ईमानदार हूं, मैं क्या हूं उनको कहां से पता चला । जो बीजू बाबू के प्रिंसीपल सेक्रेटरी थे, प्यारी मोहन महापात्र जी, उस समय उन्होंने जो कुछ सुझाव बीजू बाबू को दिए, तो मुझे वहां एम.एल.ए. होते हुए ही जनता पार्टी का जनरल सेक्रेटरी बना दिया । मैं एक आदिवासी परिवार से आया हूं हिंदी मालूम नहीं थी, इंगिलश मालूम नहीं थी, तब भी हमको जनरल सेक्रेटरी बना दिया । जब जनता दल पार्टी थी । उसके बाद नवीन बाबू आए चीफ मिनिस्टर बनकर, हमको राज्य सभा में भेज दिया । हमने ट्राई किया उड़ीसा के हित के बारे में क्या कहना है, क्या करना है, कोशिश की, लेकिन वह कितना सक्सेसफुल हुआ, पता नहीं,क्योंकि उसके बारे में भी प्यारी मोहन जी हा बहुत योगदान थ कि मैं उड़ीसा की प्रॉब्लम्स को यहां ठीक से रख सकूं । ट्राइबल होते हुए ट्राइबल प्रॉब्लम्स को मैं कैसे हाऊस में उठा सकता हूं, इसलिए मुझे मौका मिला ।

महोदय,हमारे जो पहले चेयरमैन थे, जब मैं नया-नया आया था, तब कृष्ण कान्त जी चेयरमैन थे हमने राजनीति में पहली बार तीन नाम सुने थे- चन्द्रशेखर जी कृष्ण कान्त जी और मोहन धारिया जी-ये तीनों लोग थे उस समय, three Younh Turks. जब वे मयूरभंज गए थे एक अनुष्ठान के उद् घाटन के दौरान मुझे कृष्ण कान्त जी के साथ बैठने और खाने का मौका मिला तरूण तुर्क जिसको कहते हैं, Young Turks उनके साथ हमें जो मौका मिला, उसे मैं कभी भूल नहीं सकता । इसके साथ ही जसवन्त सिंह जो लीडर थे,वे बोलते तो कम लेकिन वे हमें गहरी बात बताते थे उनका इंडियन फीडम मूवमेंट में काफी सहयोग था । हमें उनसे बहुत प्रेरणा मिली है । हमारे सिर पर पगड़ी देखकर वे सोचते थे कि ये भी राजपूत है, लेकिन मैं राजपूत नहीं हूं बल्कि ट्राइब्ल हूं । जब भी मैं उनसे मिलता था और जो हमारे दूसरे भाई राजस्थान से आते थे, जब हम उनसे मिलते थे, तो ऐसा लगता था कि हम भी जैसे राजपूत है और हमारा ब्लड भी राजपूत जैसा ही है । भारत की संस्कृति के लिए राजपूतों का काफी योगदान था और उनसे मिल-मिलकर मेरे मन में भी एक प्रकार का जोश आता थ कि मैं भी देश की सुरक्षा और भारतीय संस्कृति की सुरक्ष कर सकता हूं । उनके प्रति मैं ऋणी हूं, क्योंकि उनसे मिलकर मेरे मन का जोश बढ़ जाता था । अभी मैंने जो कर्ण सिंह जी की बात बताई हैं, इसके साथ ही मैं यह भी कहना चाहता हूं कि हमारी लाइन में दारा सिंह जी बैठते थे । मैं पहले स्पोर्ट्समैन था, उस वक्त दारा सिंह जी का नाम सुनते थे, मैं उनके साथ एक ही लाइन में बैठ

सकूंगा यह मैंने कभी नहीं सोचा था। इसके साथ ही जिन हेमा मालिनी जी की ड्रीम गर्ल कहा जाता था और फिल्म जगत में जितना उनका नाम है, जिनको हम सिनेमा के पर्दे पर ही देखते थे, वह मेरे बगल में बैठेंगी, राज्य सभा में आकर मुझे यह सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैं इसको सौभाग्य इसीलिए कहता हूं कि एक जंगल से आए हुए, एक अनपढ़ परिवार से आए हुए आदमी को इतने बड़े लोगों के साथ मिलने का मौका मिला और बातचीत करने का मौका मिला। यहां पर सुषमा जी भी आई है। हमारे राज्य में जब इलैक्शन हो रहा था, तब ये वहां पर गई थी। उनके बारे में कहा था,Half hidden from the eye,there is a star,when only one is shining in the sky . यह मैं बता रहा था वे ऐसे एक परिवार से आई थी और एक लेडी होते हुए, टी पर मैंने एक बार लोक सभा में दी गई उनकी स्पीच सुनी थी। बाद में राज्य सभा में आकर मैंने जब भी उनकी स्पीच सुनी तो ऐसा लगता था कि जैसे एक कोयल बोल रही है,sound logic and convincing, यह बहुत बड़ी बात है। मैंने उनकी अपनी कांस्टिटयुएंसी में देखा था और जब मैं राज्य सभा में आ गया और यहां पर जब उनको देखा, तो हमें उनसे काफी प्रेरणा मिली इतना ही नहीं, हमारे मित्र जो तेलगुदेशम पार्टी के हैं और जो हमारे BJP के मित्र है उनसे भी हमें प्यार मिला और जो हमारे कांग्रेसी दोस्त है, वे मुझसे कभी-कभी कहते थे कि आप क्यों बीजू जनता दल में हो, आप कांग्रेस में चले आओ, आप कांग्रेसी में मिल आओं। मैं हमेशा बोलता था,We are born in the Congress, but brought up with Biju Patnaik. Therefore, we are in the Biju Patnaik's party. At the same time, we are with Navin Patnaik. अदरवाइज, कांग्रेस हमारा कल्चर है, हम कांग्रेस से ही पैदा हुए थे, सारा देश ही कांग्रेस से पैदा हुआ था, इसमें कोई फर्क नहीं है। लेकिन मैं एक बार मज़ाक में अपने किसी दोस्त से एक बात कह रहा था कि जिस दिन से गांधी जी की टोपी आपने सिर से उतार दी, उसी दिन से कांग्रेस थोडी पथच्युत हुई। मुझे मालूम है। इसीजिए हमने हमारे दोस्त को बताया। मैं कोई यह नहीं कह रहा हूं, कि कांग्रेस पथच्युत है, लेकिन गांधी जी का जो सिद्वांत वे लेकर आए थे, अभी वह थोड़ा इधर-उधर हो रहा है, इसलिए जब मैं पहले राजनीति में आया तो जो बात मैंने बचपन में गांधी जी के बारे में पढ़ी थे कि पॉलिटिक्स में सच्चाई का कुछ स्थान है हमने कुछ-कुछ एक्सपेरिमेंट भी करके देखा है, उससे हमें कुछ न कुछ मिला है, इसलिए मैं सारे कांग्रसे भाइयों का आभारी हूं। मैंने जब कभी गलती से कोई बात कही हो, तो हमें माफ करना। जो मेरे मन में आ गया, वह मैंने बता दिया कि कांग्रेस से ही हमारी पैदाइश है। कांग्रेस से ही हम पैदा हुए हैं। ...(**व्यवधान**)...

श्री जयन्ती लाल बरोट(गुजरात): महात्मा गांधी की कांग्रेस ...(**व्यवधान**)...

श्री वीरभद्र सिंह: येस-येस,मैं महात्मा गांधी की कांग्रेस ही बता रहा हूं। इंदिरा गांधी की नहीं। मैं वही तो बता रहा हूं। ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति: ठीक है, ठीक है।

श्री वीरभद्र सिंह: इंदिरा गांधी तो साथ में आ गई, वह तो सरे आम कांग्रेस में आ गई, मेरा इंदिरा गांधी से कोई विरोध नहीं है। She was the pioneer of the Tribals and the Harijan community. हम यह नहीं भूल सकते है। हमारी याद किसी ने खोली तो वो इंदिरा गांधी की बोल्डनेस है, वह भी कोई कम नहीं है। इसलिए मैं किसी की कोई समालोचना नहीं कर रहा हूं। लेकिन गांधी जी का जो आदर्श था, हम उससे भी कहीं बिछुड़ न जाएं, ऐसा मेरा सुझाव है। एक दिन हमने एक कांग्रेसी भाई को बोला था। यह एक प्राइवेट बात है, लेकिन आज इसे हमने ओपन कर दिया है। ...(**व्यवधान**)... मैं देश की जिस ट्राइब्ल और हरिजन सोसाइटी से आया हूं, जब हिन्दी में बोलेंगे तो यह हैं,"आंख होते हुए वह अंधा है, कान होते हुए भी वह बधिर है और मुख होते भी वह मूक है-बोल नहीं सकता"। उस समाज के लोगों का मुंह कैसे खोला जाए, जिससे कि उनको हंसी आ जाए और उनके कानों में दुनिया का संवाद जा सके, इसी इरादे से हमारा यह संविधान बना है और हम सब लोग इस संविधान के प्रति उत्तरदायी है। मेरा इतना ही निवेदन है कि जो लोग पिछड़े वर्ग में है और आदिवासी, हरिजन समाज के लोग है, उनको ऊपर उठाना, दोनों हाऊसेज़ का फर्ज़ है। यहां जितने महान लोगों से मेरी मुलाकात हुई, उन सबके प्रति मैं ऋणी हूं। धन्यवाद

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Hon. Members, rest of the Members will be speaking after the Finance Bill. Now,, I request the Finance Minister.. *...(Interruptions)* ....

SHRI YASHWANT SINGH (Jharkhand): Sir, it was an issue on which I wanted to speak. The hon, Chairman has given me permission.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, no, no. The Chairman has not granted... *(Interruptions)...*

SHRI YASHWANT SINHA: Sir, this is to be taken up before the Finance Minister moves the Finance Bill.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, no; the Chairman has not said *...(Interruptions)...*

SHRI YASHWANT SINHA: The Chairman Sahib has given me the permission, Sir.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Regarding what?

SHRI YASHWANT SINHA: Regarding the breach of privilege. A notice has been given.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The breach of privilege has not been taken up.

SHRI YASHWANT SINHA: No, no, no. Sir, I have just spoken to him. And the Chairman has told me that I can raise this issue. *...(Interruptions)...*

कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन, मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री सुरेश पचौरी): उपसभापति जी,आपने already चेयर से instructions ले ली है कि Finance Bill होगा.... ...(**व्यवधान**) यदि यशंवत सिन्हा जी कोई मामला उठाना चाहते है, तो permission लेने के बाद, उचित समय पर उठाएं । (Interruptions) ...

श्री यशवंत सिन्हा : नही, यह कोई बात नहीं है । ...(**व्यवधान**)...Sir, I have given a notice.

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI P. CHIDAMBARAM): That will be considered. *...(Interruptions)...*

SHRI YASHWANT SINHA: I spoke about it *...(Interruptions)...* How can it be taken up after that?*...(Interruptions)...*

श्री सुरेश पचौरी: क्या सही समय निर्धारित हुआ है ...(**व्यवधान**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The privilege notice has not been *...(Interruptions)...*

SHRI V. NARAYANASAMY: Sir, how can a privilege notice be given? *...(Interruptions)...*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Wait, wait, wait...*(Interruptions)...* Mr. Narayanasamy, please listen to me...*(Interruptions)...*

SHRI YASHWANT SINHA: Sir, tens of privileges notices have been raised in this House against me.

SHRI P. CHIDAMBARAM: Only when the permission is granted.

SHRI YASHWANT SINHA; ....with the permission of the Chair.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The Chairman has not granted the permission. When he grants, it will be *permitted...(Interruptions)...*

SHRI YASHWANT SINHA: Sir, the Chairman has told me; I can raise it.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No. no: he has not told us *...(Interruptions)...*

श्री यशवंत सिन्हा: यह तो बहुत unfortunate है,मैं आपसे निवेदन कर रहा हूं कि ...(**व्यवधान**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I was also present in the Chamber. When you brought the privilege notice, the Chairman said, "I will study it and I will let you know." The Minister of Parliamentary Affairs was also there. *...(Interruptions)...* Mr. Naryanasamy, don't interrupt. I can deal with it.

SHRI YASHWANT SINHA: The Chairman has never said that he is not giving me permission*...(Interruptions)...*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: He has not given *...(Interruptions)...* He said," I will look into it."

SHRI YASHWANT SINHA: Please give me a minute. Sir.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: He has not given any direction.

SHRI YASHWANT SINHA: Sir, I have just *now...(Interruptions)...*

SHRI SURESH PACHOURI: No, no; it is not proper that you discuss something in the Chamber and disclose it over here *...(Interruptions)...*

SHRI YASHWANT SINHA: But he has told me that I can raise it.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I have no information*...(Interruptions)...* I will find it out from the Secretariat. In the meantime, let him move the Finance Bill.*...(Interruptions)...*

SHRI P. CHIDAMBARAM: He says, "I will discuss with the Chairman." *...(Interruptions)...* The Chairman must not have said that. You can say that.

श्री सुरेश पचौरी: उपसभापति जी, अगर चेयरमैन साहब के चेम्बर में कोई चर्चा हो और यहां उसका उल्लेख हो, यह सदन की परंपरा कभी नहीं रही है, बिल्कुल नहीं रही है ...(**व्यवधान**)...

SHRI P. CHIDAMBARAM: The Chairman must say it. *...(Interruptions)...* The Chairman must say it.

श्री यशवंत सिन्हा: यह परंपरा नहीं है, आप लोगों ने कहा कि चेयरमैन साहब के चेम्बर में चर्चा हुई, आपने उसका क्यों जिक्र किया ...(**व्यवधान**)...

श्री सुरेश पचौरी: आप चेयरमैन साहब के नाम का misuse मत करिए ...(**व्यवधान**)...

श्री यशवंत सिन्हा: चेयरमैन साहब के कमरे में जो चर्चा हुई, उसका जिक्र पहले आपने किया, मैंने नहीं किया ...(**व्यवधान**)...

श्री सुरेश पचौरी: चेयरमैन साहब के कमरे में जो चर्चा हो, उसका उल्लेख यहां नहीं होता है, यह सदन की परंपरा रही है । यह नई परंपरा आप मत डालिए ...(**व्यवधान**)...

श्री यशवंत सिन्हा: नयी परंपरा आप शुरू कर रहे है, मैं नहीं कर रहा हूं ...(**व्यवधान**)...

SHRI P. CHIDAMBARAM: What is this, Sir? The Chairman can say. You cannot say.

SHRI V. NARAYANASAMY (Pondicherry): Permission was not given by the Chairman. *...(Interruptions)...* The hon. Chairman has not given him permission.

श्री उपसभापति: आप बैठिए ...(**व्यवधान**)...

श्री यशवंत सिन्हा: मैने चेयमैन साहब को सूचना दी है , उन्होंने मुझे permission दी है ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: आप बैठिए ...(**व्यवधान**)...मैं बुलाऊंगा,आप बैठिए ...(**व्यवधान**)...देखिए यशवंत सिन्हा जी, आप एक सीनियर मेंबर है,आपने नोटिस दिया, The notice is under consideration. You know .the procedures. Unless the Chairman admits it, no matter can be raised on the floor of the House.

SHRI V. NARAYANASAMY: That is the rule.

MR. DEPUTY CHAIRMAN. Mr. Narayanasamy, when I am speaking, why are you interrupting?

SHRI V. NARAYANASAMY: I am only reminding him.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: You don't remind him. It is not your duty to remind him. It is my duty to remind him. Please don't assist me. I can handle it. यह चेयरमैन साहब के consideration में है,चेयरमैन साहब जब भी इज़ाज़त देंगे, आपको बोलने की इज़ाज़त दी जाएगी।

श्री यशवंत सिन्हा: मेरी एक छोटी सी बात सुन लीजिए । I have given a notice. Now, you said," It will be taken up after the Chairman gives permission, or admits it." Then, it will be taken up. Sir, I am aware of many examples in this House. Personally, against me, notices of privileges has been given when I was Finance Minister, and they has been allowed to be raised in this House. They has been allowed to be raised in this House. *..(Interruptions)...* They had been allowed to be raised without being admitted. *...(Interruptions)...*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, no; I have not said that you will not be allowed. I have never said that you will not be allowed. But let the notice be considered first. You will be allowed.

SHRI YASHWANT SINHA: When, Sir? *...(Interruptions)...*

श्री ललित किशोर चतुर्वेदी(राजस्थान)**:** उपसभापति जी, जिस समय चर्चा हो रही थी, उस समय मैं भी वहां था ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापतिः आप बैठिए, इसमें I don't need your assistance. आप बैठिए ...(**व्यवधान**)...

श्री ललित किशोर चतुर्वेदीः मेरा एक निवेदन है ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापतिः आप बैठिए ...(**व्यवधान**)...आप चेयर से बहस मत कीजिए, यह अच्छी परंपरा नहीं है, आप बैठिए, प्लीज आप बैठिए। The Finance Minister.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI PAWAN KUMAR BANSAL): Sir, talking about what transpired in the Chamber is also a breach of privilege. *...(Interruptions)...*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr, Finance Minister.

PAPERS LAID ON THE TABLE—*Contd.*

Outcome Budgets (2006-07) of the various Flagships Programmes

THE MINISTER OF FINANCE (Shri P. CHIDAMBARAM): Sir, I beg to lay on the Table a copy (in English and Hindi) of the document "Outcome Budgets 2006-07 of the Flagship Programmes". [Placed in Library. See No. L.T 4096/06]

GOVERNMENT BILLS

The Finance Bill, 2006

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI P. CHIDAMBARAM): Sir, I beg to move:

> That the Bill to give effect to the financial proposals of the Central Government for the financial year 2006-07, as passed by Lok Sabha, be taken into consideration.

Sir, I just wish to say a few words, after moving the Bill. I announced a few concessions yesterday in the Lok Sabha. The Lok Sabha has approved the Bill. As far as the Finance Bill is concerned, it relates to the taxation